# निर्मला योग

द्विमासिक | वर्ष ३ अंक १७ | जनवरी-फरवरी १९८५

ॐ त्वमेव साक्षात्, श्री कल्की साक्षात्, श्री सहस्रार स्वामिनी,
मोक्ष प्रदायिनी, माता जी, श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

卐 ॐ श्री माँ 卐

## भजन

आपने हमको नव जीवन दिया।
क्या दें हे माँ ! हम आपको ॥

अमूल्य रत्न मिला प्रेम का।
चिंता नहीं अब कोई क्षेम का ॥
कृत-कृत्य हुये हम तृप्त हुये।
जीवन में शाही शान दिया ॥ आपने ॥१॥

पड़े रहे हम पत्थरों के बीच।
रत्न का हमको मान दिया ॥
अहंकार से दबे हुये थे।
आत्म-तत्व का ज्ञान दिया ॥ आपने ॥२॥

कोलाहल से भरे ये कान हमारे।
शांति का हमको संदेश दिया ॥
शंकाओं, चिंताओं से घिरे रहे।
सहज प्रेम का उपदेश दिया ॥ आपने ॥३॥

खाते रहे ठोकरें अंधेरे में।
अब हुये आलोकित पथ हमारे ॥
आत्म - दृष्टि देकर हमको।
परमात्मा का ज्ञान दिया ॥ आपने ॥४॥

तेरा बालक बनना बड़ा सौभाग्य है।
वास्तव में, यही 'स्वराज्य' है ॥
हे अनंत जीवन की स्वामिनी !
जीवन हमारा अमर किया ॥ आपने ॥५॥

## भजन

सहजयोग अपनाना बन्दे !
माँ के ही गुण गाना।
'अंतिम निर्णय' प्रभु का यह,
अवसर चूक न जाना ॥१॥ सहजयोग ॥

छोड़ सब छल - कपट अब,
माँ के शरण में जाना।
पाकर पुनर्जन्म सहज में,
जीवन सफल बनाना ॥२॥ सहजयोग ॥

माँ का प्रेम निर्मल निर्झर,
निसदिन नहाना।
चैतन्य-लहरियों से भर भर अंजुलि,
अर्घ्य अपूर्व चढ़ाना ॥३॥ सहजयोग ॥

माँ का नाम महामंत्र है,
हर पल जपते जाना।
माँ ही आत्मा, परमात्मा,
आत्म समर्पित हो जाना ॥४॥ सहजयोग ॥

जग को भूल भुलैया में,
अब तू भूल न जाना।
काट ले माया का फंदा,
भ्रम में क्यों भरमाना ॥५॥ सहजयोग ॥

प्रम, आनंद का मसीहा बन
धरा को स्वर्ग बनाना।
'प्रभु के साम्राज्य' का नागरिक बनकर,
जीवन अनंत पाना ॥६॥ सहजयोग ॥

॥ जय माता जी ॥

—सी० एल० पटेल

# सम्पादकीय

सहजयोग में प्रगति के लिए समर्पण आवश्यक है। समर्पण मानसिक रूप से नहीं अपितु हृदय से होना चाहिए। हालांकि समर्पण अत्यन्त ही कठिन है, फिर भी सहजयोगी यदि अपनी बाधाओं को ही निर्विचारिता में समर्पित करना शुरू कर दें तो काफी हद तक हम सभी अपने आपको श्री माताजी के चरणों में पूर्ण रूप से समर्पित कर सकते हैं।

बिना समर्पण के सहजयोग अधूरा है।

# निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर. डी. कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : लोरी हायनेक
३१५१, हीदर स्ट्रीट
वैन्कूवर, बी. सी.
वी ५ जैड ३ के२

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पैट्रूनीया
२७०, जे स्ट्रीट, १/सी
ब्रुकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत श्री एम० बी० रत्नान्नवर
१३, मेरवान मैन्सन
गंजवाला लेन, बोरीवली
(पश्चिमी) बम्बई-४०००९२

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विस लि.,
१३४ ग्रेट पोर्टलैण्ड स्ट्रीट
लन्दन डब्लू. १ एन. ५ पी. एच.

इस अंक में ..... पृष्ठ

१. सम्पादकीय ... १
२. प्रतिनिधि ... २
३. परमपूज्य माताजी का प्रवचन ... ३
४. ,, ,, ,, ,, ... ८
५. मातेश्वरी जगदम्बिके ... ११
६. परमपूज्य माताजी का प्रवचन ... १२
७. मधुराष्टकम् ... १५
८. सद्गुरू तत्व और विशुद्धि तत्व ... १६
९. भजन ... द्वितीय कवर
१०. चक्रों की शुद्धि के लिए प्रार्थना ... चतुर्थ कवर

## 卐 जय श्री माता जी 卐

दिल्ली सहज मन्दिर
होली पूर्णिमा
१७-३-८४

आप लोग रूपया तक देने से घबराते हैं। यह गलत बात है। यह सुनकर तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि बम्बई के लोग और हैं। अगर पूजा होगी तो सब में कशमकश लगी रहेगी कि हम कितना रुपया दें। यहाँ माँगना पड़ता है। रूपया तो कभी बम्बई में कम नहीं होता। आपको मालूम है कि बम्बई में लोग हजारों रुपया खर्च करते हैं और अपने यहाँ उन्होंने बना रखा है कि इतना रूपया हम भगवान के नाम पर रखेंगे। यह बड़ी शर्म की बात है कि इन लोगों को आपसे रूपया माँगना पड़ता है और इस तरह की चीजें नहीं होनी चाहिए। और अगले वक्त मैं ये न सुन पाऊँ कि आप लोगों से रूपया माँगा जाता है। यह तो परमात्मा का काम है। आप यहाँ आकर के इतना लाभ उठाते हैं। आपकी तन्दुरुस्ती ठीक हो जाती है, तबियत ठीक हो जाती है और आप टाइम (समय) नहीं दे सकते अपने को, आप ध्यान नहीं कर सकते और आपको दुनिया भर के काम है, लेकिन आपके पास ध्यान करने के लिये 'टाइम' नहीं है। मतलब यह है कि "मुझे बाजार जाना था, माँ, मैं क्या करूं, मुझे जरूरी जाना था, सुना कि आज ताजी सब्जी आई थी तो लेने जाना था", लेकिन ध्यान के लिए उनको समय नहीं है। "मुझे अपने ब्लाऊज का मैचिन्ग करना था, इसलिये मैं गई।" आदमियों का दूसरा है, "आज दफ्तर में कान्फ्रेन्स थी, मुझे जाना ही था इस कान्फ्रेन्स में, तो मैं ध्यान नहीं कर सका।" भई सुबह चार बजे उठो, अगर कान्फ्रेन्स है तो। जो जरूरी चीज है वह है ध्यान करना। जो बड़ा goal (उद्देश्य) है उसे देखना चाहिये। जो चीज है, वह है ध्यान करना। Conference (सभा) है, जो जरूरी चीज है, वो है ध्यान करना जो बड़ा यह goal है उसे देखना चाहिए। दफ्तर थोड़ा सा आपने नहीं किया तो भी कुछ नहीं जायेगा, क्योंकि lower goal (निम्न उद्देश्य) है। ऐसे हजारों दफ्तर वाले मैंने देख लिये जो कि फाइलों पर फाइलें लाद के मर गये लेकिन कोई पूछता भी नहीं कि कहाँ गये और कहाँ खत्म हो गए। हजारों को मैं जानती हूँ क्योंकि मैंने जिन्दगी भर इन्हीं लोगों के साथ जिन्दगी काटी है। तो दफ्तर की जो महत्ता है वो मैं अब जानती हूँ, उसकी महत्ता आप मुझसे न बतायें कि आज दफ्तर में ये था, ऐसा हुआ, दफ्तर में मैं फंस गया। दफ्तर क्या चीज है। आपसे ध्यान नहीं होता। इतनी छोटी-सी चीज आपसे नहीं होती। ये भी सोचना चाहिये कि हम माँ से हम सब ठीक करवाना चाहते हैं, हमने माँ के लिए क्या किया।

सब अपने मन में सोचें कि हमने माँ के लिये क्या किया। सबसे निम्न चीज है कि पैसा देना। इससे निम्न कुछ है ही नहीं। माँ कितना रुपया देती रहती हैं हर साल। हमने कितना रुपया दिया। वो श्रीवास्तव साहब तो कोई सहजयोगी नहीं। लेकिन उनकी अक्ल बहुत जबरदस्त है कि अगर इसमें रुपया पैसा दिया जाये तो अपना लाभ होता है और उनको हो ही रहा है। उनको सारा लाभ हो रहा है रुपयों पैसों का और आप लोगों को लाभ नहीं होता। फिर कहेंगे कि हमारी नौकरी

नहीं चलती, हमें घाटा आ रहा है। होगा ही। वो होशियार आदमी हैं, उन्होंने कहा चलो भैया ये तो पालो, करो। और आप लोग दो-दो रुपये, चार-चार रुपये के लिये, मुझे तो आश्चर्य है, मोटरों में घूमते हैं, सबके पास मोटरें हैं, पेट्रोल है, सब चीज, शानबाजी बहुत है। ये जो चीज ऊपर आ गई है दिखावे की, दिखावा, ये अपने North India (उत्तरी भारत) की खास चीज है। ऊपर का दिखावा। कपड़े अच्छे होने चाहिये, मोटर होनी चाहिये, घर सुन्दर होना चाहिये। लेकिन आपके मन्दिर में कितना दीप जल रहा है, सादगी पे उतर कर। सादगी पे आइये, तभी अन्दर के आत्म-दीप की ओर नजर जायेगी।

ये मैं नहीं कहती कि आप फकीर बनकर जियें। ये बात नहीं है, मतलब ये है कि आदमी को traditional (परम्पराचारी) होना चाहिये। Traditional तरीके से रहिये लेकिन जो glamorous पना (चटक-मटक) है, और जो आदमियों की शानशोखी है, वो खत्म होनी चाहिये। हम लोग कोई अंग्रेज नहीं कि कीमती सूट पहन करके घूमें। क्या जरूरत है सूट पहनने की? अपना देसी कपड़ा पहनिये। देसी तरीके से रहिये, इसमें अपनी शोभा है। उसमें अपनापन। बेकार में अपने को show बाजी (दिखावा) करना और दिखाना। यहाँ इतना show (दिखावा) है मैं आपको बता नहीं सकती। अगर किसी के घर जाइये तो मुझे तो समझ नहीं आती। एक बार हमारे चपरासी की बीवी मुझे मिलने आई। तो शनील का सूट और शनील का सब कुछ। अब मुझे क्या पता था कि ये चपरासी की बीवी है। मैंने कहा भैया सोफे पर बठो। वो तो मुझसे भी अच्छे कपड़े पहन के आई थी। मतलब मैंने कहा सोफे पर बठो तो बैठे न। मैंने कहा, हुआ क्या भई, बैठतो क्यों नहीं? इधर-उधर देखने लगी तो कहती है, कि माँ बात ये है कि मैं चपरासी की बीवी है। तो मैंने कहा, अच्छा चलो बैठो, कोई हर्जा नहीं, तुम शनील पहन कर आई हो, तो कहाँ जमीन पर बैठोगी। यही हमारे धोबी साहब के यहाँ है। एक हमारे धोबी साहब थे यहीं दिल्ली में, बहुत दिनों तक रहे, धोबी अभी भी हैं। तो वे एक दिन सूटबूट पहनकर आये, वो तो धोबियों का ये कि किसी का भी सूट झाड़कर पहन लिया, ये धोबी की जात है। तो किसी का सूट-बूट झाड़कर आया। तो कहने लगा कि माताजी कैसा सूट लग रहा है? अरे मैंने कहा, ये तो साहब का सूट है। कम से कम हमारे घर तो साहब का सूट पहन कर मत आना था। वो भी काफी लम्बा चौड़ा था, मैंने कहा इस लिये तुम हमें छोड़ते नहीं हो, क्योंकि साहब का तुम्हें dress (कपड़े) तुम्हें fit (सही) होता है, इसलिये तुम हमें छोड़ते नहीं हो, मुझे पता है। ये तो हम लोगों की दुर्दशा है। माने ये कि सूट जरूर झाड़ेंगे, चाहे तो किसी का मारा हुआ हो, कोई हर्जा नहीं। सूट झाड़कर रौब झाड़ना। कितनी देर का रौब होता है? ये रौब कितने देर का? एक क्षण भी नहीं। अन्दर का रौब होना चाहिये मनुष्य में, और traditional (परम्पराचारी) नहीं हैं हम लोग। औरतें फौरन sleeveless (बिना बाजू का) पहनकर घूमती हैं। मैंने देखा है औरतों को sleeveless फट में पहनेंगी। sleeveless पहनना अपने यहाँ कोई देवी देवता, कभी मैंने सुना नहीं sleeveless पहनती थीं। हमारी लड़की ने एक दिन कहा, "माँ यहाँ सब लड़कियाँ, जब दिल्ली आए, सब लड़कियाँ हमारे स्कूल में sleeveless पहनती हैं, हम पहनें?" तो हमने कहा, "जैसा तुम्हारा मन हो", पर तुम क्यों नहीं पहनती? मैंने कहा, 'मैं तो नहीं पहन सकती, क्योंकि मैंने कभी पहना नहीं। मुझे शर्म आती है, ये शरीर क्यों खुला रहे। ये तो चीज ठीक नहीं"। तो कहने लगी जब ठीक नहीं तो आप कहती क्यों नहीं कि ये ठीक नहीं।" मैंने कहा आपके पास अक्ल है, आप खुद तय करिये कि अगर हम नहीं पहनते और अगर आपने पहनना है तो हम क्यों आपको जबरदस्ती करें। पर मैं कभी नहीं पहनूंगी। There is no criteria (यह कोई आवश्यक नहीं है) ये तो कोई

criteria (आवश्यक) नहीं कि मैंने कह दिया तो आपने हाँ कर दिया। मैंने कहा कि आप अपना दिमाग लगाइये कि माँ क्यों नहीं पहनतीं। Sleeveless पहनेंगी, इतना लम्बा गला पहनेंगी, ये सब तरीके आप छोड़ दीजिये। सहजयोगियों को ये शोभा नहीं देता। कायदे के कपड़े पहनिये। जो कायदे के कपड़े हैं, अपने traditional (परम्परागत) तरीके से। पाँव में ठीक से पायल होनी चाहिये, आपके पाँव में बिछिया होनी चाहिये. आपके गले में मंगलसूत्र होना चाहिये। कायदे की औरतें होनी चाहिये। बाल कटाकर बैठ गईं, बाल किसलिए कटाने हैं, क्यों बाल कटाती हैं आप लोग ? आप कोई अंग्रेज हैं जो बाल कटायें ? किसलिये आपको बाल कटाने की जरूरत है ? कुछ समझ में नहीं आता। हमारे यहाँ बाल कटाना सिर्फ विधवाओं का होता है और विधवाओं को भी बाल कटाना जो होता है, बिल्कुल मुंडन होता है। ये नहीं कि बाल कटाकर के hair dress (केश सज्जा) बनाकर के घूमना, सहजयोगियों को शोभा नहीं देता। यही आदमियों का हाल है। अब ये लोग भी आजकल, मैंने सुना है कि यहाँ के आदमी लोग भी, कुछ सहजयोगी भी काफी फैशन करते हैं। फैशन सहजयोग में बिल्कुल नहीं शोभा देता, आपकी dignity (शान) में। ऐसे आदमी को आपको मालूम नहीं कि कोई इज्जत नहीं देता। परदेश में मैंने देखा है हमारे साथ एक cabinet minister (केन्द्रीय मंत्री) थीं, cabinet minister नहीं secretary (सचिव) की बीवी थीं। Chief secretary (मुख्य सचिव) chief cabinet secretary की। उसकी बीवी आई एक बार। वो South India (दक्षिण भारत) की थीं। लेकिन वो बीवी अपने को बहुत अफलातून समझती थीं। तो दुबली-पतली थीं और एक दिन हम लोग पार्टी में गये खाना खाने। तो वहाँ पर देखा कि हम गये तो हमको बड़ी इज्जत के साथ उन्होंने हमें बैठाया। हमारे husband (पति) भी बैठे, और ये महाशय जब वहाँ बैठे तो उन्होंने कहा कि आपकी बीवी कहाँ है ? कहने लगे आपको तो कोई बीवी आई नहीं। कहने लगे मेरी कोई बीवी नहीं आई, वो तो आने वाली थी, वो कहाँ चली गई। वो कहने लगे नहीं, कोई नहीं आई। उसके बाद हम बैठे तो उन्होंने कहा कि आपकी कोई सेक्रेट्री आई हुई है। देखा तो उनकी बीवी साहिबा वहाँ जीन पहनकर पहुँची हुई थीं। तो उन्होंने कहा, ये तो कोई सेक्रेट्री होगी। वो अपने को बड़ा खूबसूरत समझ कर घूम रही थी। असल में औरत में जब dignity (मर्यादा) नहीं होगी तो वो मुझे लगेगी जैसे कि कोई क्लर्क बाबू की बीवी आई हुई है, या वहाँ पर कोई जमादारनी के जैसी दिखाई देती है। हिन्दुस्तानी औरत जो इस तरह के कपड़े पहनती है बिलकुल जमादारनी जैसे, और ऐसे जमादारनी जैसे कपड़े पहन करके घूमना कोई अच्छी बात नहीं। अपनी इज्जत अपने हाथ में है। अगर आप अपनी इज्जत नहीं रखेंगे तो दुनिया आपकी इज्जत नहीं करेगी। आप लोग किस तरह के कपड़े पहनते हैं; किस तरह से चलते हैं, कि अपने देश के गर्व के साथ, जो अपने देश का dress (पहनावा) है वो सबसे अच्छा dress (पहनावा) है। हाँ कभी-कभी पहनना पड़ता है formalities (औपचारिकता) पर, कभी आप सूट पहन लीजिये, पर हर समय सूट पहनने की कोई जरूरत नहीं। तो यहाँ पर मैं देखती हूँ बहुत से सहजयोगी लोग रौब झाड़ने को जाते हैं और यहाँ पर जो हैं foreign (विदेशों) से आये हुये लोग हैं, मुझसे कहते हैं कि माँ हमें इसलिये अच्छा नहीं लगता है कि वहाँ पर सब suited-booted (सजे-धजे) लोग रहते हैं। उनको अच्छा नहीं लगता, क्योंकि आप उनका अनुकरण कर रहे हैं। उनको लगता है कि ये लोग क्या अजीब लोग हैं, इनके पास इतने अच्छे-अच्छे dress (वस्त्र) हैं, उसे पहन सकते हैं। इतनी गर्मी हो रही है, उस वक्त ये लोग अपने ये पहन करके आ रहे हैं। इनको बिल्कुल ही अपनी कोई प्रतिष्ठा नहीं। जो स्वयं अप्रतिष्ठित होते हैं, वो इस तरह से glamour (दिखावे) में रहते हैं। Glamour (दिखावा) तो वो चीज है जिससे आदमी में एक तरह की defi-

ciency (हीनता) होता है वो glamour लगता है कि सिर पर डालडा का टीन रख लीजिये उसके ऊपर में बूफा बनाइये और फिर वो डालडा का टीन या बालों में खूब ऐसे-ऐसे सजा-सजा करके बाल-वाल बनायें। क्या जरूरत है? कोई जरूरत नहीं। आप बिल्कुल सादगी से रहिये। कहीं आपने कोई देवी को देखा है कि वो इस तरह के बेकार के आडम्बर करती हैं। अगर करे, एक बार हमें जबरदस्ती ठेल-ठाल कर लोग ले गये तो मैं तो भूत लगने लग गई। मैंने कहा हे भगवान फेंको इसे, बेकार की चीज, सरदर्द हो गया। पर कैसे लोग बर्दाश्त करते हैं और किसलिये ये सारा बर्दाश्त करते हैं? किसलिये? इससे किसी को लाभ नहीं होता है, कोई सुखी नहीं होता, किसी को आनंद नहीं आता। उल्टे घबराहट होने लगती है।

तो ये चीजों को समझना चाहिये कि श्रीकृष्ण की जो लीला है, उस लीला में सौष्ठव है, उसमें माधुर्य है, उसमें इस तरह की गंदगी नहीं है कि जिसको देखते साथ ऐसा लगता है कि ये क्या चले आ रहे हैं सामने से, बार तरह के बाल रंगा करके, ऐसा बड़ा-सा चश्मा पहन करके, जैसे खूंखार इन्सान आपके ऊपर चला आ रहा है। उनके अन्दर सौष्ठव था। उनके dress (वस्त्र) देखिये, पीताम्बर पहनते थे। हमारे यहाँ कितने लोग पीताम्बर पहने हुये हैं, बताइये? जो कृष्ण पहनते थे। क्योंकि वो तो पीताम्बर पहनने से तो, अरे बाप रे! हम तो बिल्कुल देहाती हो गये, कोई नहीं पीताम्बर पहनता, और वो मुकुट लगाते थे, वो भी मोर मुकुट लगाते, मोर मुकुट उसको लगा लेते थे, क्योंकि थे तो भगवान ही तो उनको मुकुट चढ़ाना है, तो मोर का लगा लेते थे। लेकिन अपने यहाँ बूफा बना लेते हैं। बताइये और आदमी लोग और क्या-क्या तमाशे कर रहे हैं। इससे क्या फायदा? जो असलियत पे आदमी को रहना चाहिये। पहली चीज ये है कि अपने को ये समझ लेना चाहिये कि हमें असलियत पर रहना है। असलियत इन्सान की जो है वो बहुत रुचिकर और सुन्दर है, और जो ऐसे फालतू चीजों के पीछे में आदमी जब जाता है तो उसका जो रूप है वो विद्रुप हो जाता है। जैसे कि एक साहब पार्टी में बहुत बनठन कर गये, तो उन्होंने सोचा कि बैरा है तो उनके हाथ में उन्होंने अपने सारे गिलास-वगैरा पकड़ा दिये, और वो अपने को बड़ा लगा के एक टाई-वाई लगा के आये। मैंने कहा, इन राजा-महाराजाओं का गबाल ही खराब हो गया। बड़े बन के आये थे राजे और उनको उन्होंने सबने वो गिलास पकड़वा दिये। मैंने कहा कि भई विचारों को ऐसे ही पकड़वा दिया उन्होंने। दो-एक दिन मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। मैं एक पार्टी में गई थी, तो वहाँ एक ambassador (राजदूत) साहब हिन्दुस्तान के, बड़े अंग्रेज बनकर आये थे। तो मैंने सोचा कि कोई नीग्रो-वीग्रो होगा, उसको भी बैरा बनाकर के भेज दिया होगा। यहाँ पर कोई नीग्रो हैं कि क्या हैं। तो उसको मैंने खुद ही गिलास पकड़वा दिया। तो ये दौड़े-दौड़े आये कि अरे क्या करती हो, अरे क्या करती हो? ये अपने ambassador (राजदूत) साहब हैं। भई मैंने कहा, कायदे से अपना बंद कॉलर का पहन करके, कायदे से आते तो मैं कहती भी कि हिन्दुस्तान के ambassador (राजदूत) आये हुये हैं। ये इतनी जो टाई-वाई लगा करके आये तो भी खूब मोटी, ऐसे-ऐसे फूली हुई, बिल्कुल जैसे बैरा लोग लगाते हैं। मैंने कहा तमीज से कपड़े पहनो। ऐसे ही इंग्लैण्ड में आप देखिये कि रानी का जब वो होता है पार्टी तो वहाँ भी ये चलता है। ये सब अंग्रेजों से हमने सीखा हुआ है फालतू का। तो वहाँ पर ये है कि tail coat (एक प्रकार का वस्त्र) आप पहनते हैं, जिसको वो क्या है long suit (लम्बा सूट) कहते हैं। अब वो सबके पास तो होता नहीं, कोई रखता नहीं, तो वहाँ एक Ross Brothers (रॉस बन्धु) करके हैं। Ross Brothers—तो Ross Brothers जो हैं वो सबको देते हैं कि आप ये hire (भाड़े पर) करो। अब भैया अच्छे-भले लोग सीधे नहीं चलते, टेढ़े-टेढ़े चलते हैं। मैंने कहा क्या वो तो comfortably (आरामपूर्वक) चल

रहे हैं, उनको सब tight (तंग) कपड़े, कोई लटके हुये हैं, किसी के यहाँ तक पैर जा रहा है, कोई ढीले-ढाले बिल्कुल जोकर बने हुये हैं, clown जैसे। मैंने कहा जो अच्छे-भले लोग थे ये कैसे लग रहे हैं। मुझे तो हंसी पे हंसी आती रही। पूरे समय मुझे हंसी आती रही। इन्होंने पूछा तुम्हें हंसी क्यों आती है? मैंने कहा ये देखो clown (जोकर), ये तो इतना अच्छा आदमी है, इसको क्या हो गया, ये clown जैसे बना चला है। भगवान की कृपा से जब से हम पहुँचे तो ये allow (इजाजत) हो गया कि आप अपना national dress (राष्ट्रीय पोषाक) पहन कर आइये। तो मैंने कहा, नहीं तो मैं तो आपके साथ चलती नहीं। Clown (जोकर) बनकर के, मैं चलने नहीं वाली। ये सब भगवान की कृपा हो गई, समझे ना। फिर उससे अजीब-अजीब लोग dressed आते हैं, varieties (भिन्न-भिन्न रूप) आती हैं—कोई अजीब तरह का पहन कर आते हैं, जिसको आप अजीब से कहें। वो पर दिखने को तो मिलता है कि इनका national dress (राष्ट्रीय पोषाक) क्या है। Variety (विभिन्नता) से सौंदर्य आता है, सब अपने tradtion (परम्परा) की तरह से कपड़े पहनते हैं। उनके देश में जो tradition बनता है। अपने देश में भी जो कुछ tradition बने हैं, वो भी इस हिसाब से tradition बने हैं कि जिससे हमारेदेश में जो जरूरी चीज है, जिस तरह का dress (वस्त्र) पहना वो धीरे-धीरे वो tradition बाँधते जाता है। जिस तरह का हमारे लिये शोभा देता है, उपयोगी है, उसको छोड़कर एकदम अंग्रेजों जैसे कपड़े पहनने की क्या जरूरत है? और अंग्रेज जैसे पहनेंगे। नहीं तो बिल्कुल जैसे वो beach (समुद्र किनारे) पर पहनकर घूमते हैं, वैसे पहनकर घूमेंगे। दोनों चीज हमारे देश के लिये शोभा नहीं देतीं। हमारा देश भी बहुत बड़ा प्रतिष्ठावान है, क्योंकि बड़े पूर्वजन्म के सुकृत से आप इस देश में पैदा हुये हैं। इनको पूर्वजन्म का कुछ मालूम ही नहीं। फिर उनके सुकृत को कौन बात करे। तुम्हारे तो पूर्वजन्म के इतने सुकृत हुये, इसी देश में आप पैदा हुये और इस देश में पैदा होने के बाद इसकी शान से रहे। औरतों को भी चाहिये कि इसकी शान से रहे। देखिये आप हिन्दुस्तानी ढंग से कपड़ा पहना कीजिये। आपकी इज्जत होगी, लोग आपको पसंद करेंगे, आपको मानेंगे। महाराष्ट्र में इस मामले में लोग काफी ये हैं। आसानी से अपना dress नहीं छूटता, आसानी से नहीं छूटता और देहातों में तो बिल्कुल ही नहीं, चाहे कुछ हो जाये देहातों में बिल्कुल नहीं छूटता। उनका dress (पहनावा), मैं तो ये कहती हूँ कि traditional dress आप पहनिये, सब तरह के आप जेवर पहनिये, उसमें कोई हर्ज नहीं, क्योंकि ये अपने देश का tradition (परम्परा) है, और ये सारे जितने भी जेवर हैं ये सारे एक-एक चक्रों पे उसकी शोभा के लिये हैं। लेकिन आपको कोई जरूरत नहीं कि आप अंग्रेजों जैसे फ्राक पहनकर घूमिये और या उनके जैसे कपड़े पहनिये। हाँ कभी आपको formalities (लोकाचार) पर पहनना पड़े। पर अधिकतर अपने ही देश का dress सहजयोगियों को पहनना चाहिये, हरेक आदमी को। जिस देश में रहो, अगर इंग्लैण्ड में रहो तो इंग्लैण्ड जैसा dress पहनो।

॥ जय श्री माता जी ॥

धर्मशाला
देवी पूजा
२९-३-८५

आज के शुभ अवसर पर हम यहाँ आए हैं। आज देवी का सप्तमी का दिन है। सप्तमी के दिन देवी ने अनेक राक्षसों को मारा, अनेक दुष्टों का नाश किया, विध्वंस कर डाला। क्योंकि सन्त-साधु जो यहाँ पर बैठे हुए तपस्या में संलग्न थे उनको ये लोग सताते थे।

हम लोग सोचते हैं कि माँ ये क्यों, क्यों इन्होंने इतनी तपस्या की। इनको क्या जरूरत थी इतनी penance (तप) करने की, इतनी तपस्या करने की। वजह ये कि तब मनुष्य का तपका बहुत नीचा था। लेकिन आँख बहुत उन्नत थी। वो सोचते थे कि हम इस शरीर से उस आत्मा को प्राप्त कर लें। इसलिए उन्होंने इतनी मेहनत की और इस स्थान में बैठ करके इतनी तपस्विता की। आज उन्हीं की कृपा से हम लोग आज इतने ऊँचे स्थान पर बैठे हुए हैं। उन्हीं की कृपा से हमने पाया।

इसका मतलब ये नहीं कि हम लोग इस सहज-योग को समझ लें कि हमारे लिए एक बड़ी भारी देन हो गयी, कोई हम बड़े great people (ऊँचे लोग) हैं जिनको कि भगवान ने वरण कर लिया, we are chosen people (हम लोग चुने हुए मनुष्य हैं) और इस तरह की बातें सोचने वाले लोगों को मैं बताती हूँ बड़ा धक्का बैठेगा। ये देखेंगे कि जो लोग यहाँ पर भोले-भाले हैं, जो यहाँ सीधे-सरल हैं, जो स्वभाव से अत्यन्त सुन्दर हैं, वे सबसे पहले आकाश की ओर उठेंगे और बाकी सब यहीं धरातल पर बैठे रहेंगे। जितनी जड़ वस्तु है सब यहीं रह जाएगी। इसलिए सिर्फ आपका realization (साक्षात्कार) होना पूरी बात नहीं है। मैं यही बात अंग्रेजी में कह रही थी, वही बात आपसे कह रही हूँ।

इस शुभ अवसर पर ये जानना चाहिए कि परमात्मा ने अपनी सारी शक्तियाँ आपकी सुरक्षा के लिए, आपके क्षेम के लिए, आपकी अच्छाई के लिए लगा रखी हैं। पूर्णतया परमात्मा आपको आशीर्वाद दे रहे हैं। पूर्णतया वो आपको देखना चाहते हैं कि आप परमात्मा के साम्राज्य में आएं। उसका अभिवादन है एक तरह से कि आप अपने पिता के घर आइए और आ करके वहाँ पर आप आनन्द से बैठिए। लेकिन उस लायक तो होना चाहिए। अगर हम उस लायक नहीं हैं तो क्या हम वहाँ जा सकते हैं? हमारी लियाकत हमें देखनी चाहिए कि क्या है?

सबसे पहले बात है कि आप पिता के घर आए, मैं भी आज अपने पिता के घर आयी, ऐसा मुझे लगता है, क्योंकि हिमालय मेरा पिता है। आते ही साथ सबसे पहले जो भावना मेरे अन्दर उमड़ी वो मैं शब्दों में नहीं बता पाऊँगी, लेकिन ऐसा सोचती हूँ कि जैसे कि आज मेरे पिता के गौरव का मुझे एक बड़ा अच्छा समय मिल गया है। बड़ा शुभ अवसर प्राप्त हुआ है कि इस समय मैं अपने पिता के गौरव की गाथाएं लोगों से कहूँ कि इस पर

आकर जिन्होंने भी तपस्याएं करीं उन्होंने कहाँ से कहाँ अपनी उन्नति कर ली। इस हिमालय को देख करके जिन्होंने उच्चतम स्थिति प्राप्त करी, उन्होंने न जाने कहाँ से कहाँ अपने को उठा लिया।

ये सहस्रार है जो पृथ्वी ने आपके लिए बनाया हुआ है। इस सहस्रार की पूजा होनी चाहिए। ये सहस्रार बहुत ऊंची चीज है। पता नहीं आपको इसमें से चैतन्य की लहरियां निकलती हुई दिखाई दे रही हैं कि नहीं। मेरे चारों ओर सिर्फ चैतन्य के और कुछ नहीं दिखाई दे रहा। चारों ओर चैतन्य ही चैतन्य है और इसमें रहने वाले लोग भी उस चैतन्य से ऐसे लिपटे हुए हैं, ऐसे समाए हुए हैं कि मानो जैसे सागर में मछलियां तैर रही हों। कोई भी उनमें और उनमें भेद नहीं रहा। जो पानी है उसी का उपयोग जैसे मछलियां अपने तैरने के लिए कर रही हों। ये जो चैतन्य चारों तरफ फैला हुआ है, इतना यहाँ सुन्दर और इतना मनोरम है कि उसका वर्णन मैं वाकई शब्दों में नहीं कर सकती। और ये सारी हिमालय की कृपा है। हिमालय की कृपा है।

हिमालय! सर्वप्रथम सोचिए कि हम लोग सागर को अपना गुरु मानते हैं। सागर हमारा पिता है और सागर जब सारा मैल छोड़-छाड़ करके दुनिया की सारी गन्दगी उसके अन्दर जब गिरती है, उसे नीचे छोड़ करके और जब वो आकाश में बादल की तरह उठता है तब वो बिलकुल निष्पाप, सुन्दर, शुद्ध ऐसा बहता बहता इस हिमालय के चरणों में जब आता है तब वो यहाँ पर हिम बनके छा जाता है। शब्द भी 'धवल' है। धवल माने 'अति' शुद्ध, अत्यन्त स्वच्छ, अत्यन्त निर्मल। ऐसी ये जो धाराएं हैं, ऐसी ही धाराएं इस हिमालय में बह सकती हैं। ये धाराएं वही है जो हमारे मस्तिष्क में भी बहती हैं और जिसके सहारे हमारा सहस्रार प्रज्ज्वलित होता है।

इसके अन्तर्गत क्या-क्या कहना चाहिए और क्या-क्या नहीं, ये मैं नहीं बता सकती। लेकिन इतना ही बताती हूँ कि आज की जो यहाँ की एक आपको बहुत अच्छी संधि मिली है, एक शुभ अवसर मिला है उसकी गहराई में उतरने का प्रयत्न करें। उसकी महानता में उतरने का प्रयत्न करें। और ये सोचिए कि हम इसके सामने एक अकिंचन, एक छोटे से क्षुद्र हैं। हमारे अन्दर ऐसी कोई भी विशेषता नहीं है कि जो हम इस हिमालय के सामने अपने को उद्दामता से देख सकें। हम हैं ही क्या? ये तो महान चीज है!

और ये सहस्रार, सारी सृष्टि का सहस्रार यहाँ है। इसने सारी सृष्टि को ही इतना आराम, इतना सुख और इतना आनन्द दिया हुआ है कि इससे आगे हमें और कुछ पाने का नहीं। इस सहस्रार के सहारे ही मैंने आप लोगों का सहस्रार खोला। इसी सहस्रार के सहारे मैंने जाना कि जब तक हिमालय की शान्ति आपके अन्दर नहीं आएगी, उसकी शीतलता आपके स्वभाव में नहीं आएगी, तब तक आपका सहस्रार खोलना भी व्यर्थ जाएगा।

नहीं तो आग की भट्टी की तरह से ये सहस्रार जलता है। जब मैं देखती हूँ कुछ-कुछ लोगों को, तो लगता है, हे भगवान मैंने इनका सहस्रार क्या खोल दिया अन्दर से आग की भट्टी जल रही है। अन्दर से इतना धुंआ और इतनी गन्दगी निकल रही है कि अच्छा है इनका फिर से सहस्रार बन्द ही कर दो। ऐसा भानुमती का पिटारा खुल गया है कि पता नहीं इसके अन्दर से क्या क्या चीजें निकल रही हैं। देखते के साथ ही आश्चर्य होता है कि साँप, बिच्छु, दुनिया भर की जो जो चीजें गन्दगी की हैं वो सारी उभर करके ऊपर चली आती हैं।

आज इस हिमालय को याद करके और उन सात देवियों को याद करके जिन्होंने यहां पर बहुत पराक्रम किए हुए हैं, उनको याद करना चाहिए कि हमारे पास भी दैवी शक्ति आए। और उस दैवी शक्ति को पूर्णतया हम एक माँ से प्राप्त किए हुए हैं।

इसलिए जो माँ का स्वरूप है, उस स्वरूप को लेते हुए हम हिमालय की शरणागत हों।

अपनी ओर नजर रखिए। लोग दूसरों को सोचते हैं। ये सोचते हैं, ये आदमी खराब है। That man is not good, that fellow is not good. What about yourself ? See yourself. सबको अपने को देखना है। दूसरों को नहीं देखना है। ये आदमी ये नहीं करता, वो आदमी वो नहीं करता। आप क्या कर रहे हैं, उसे देखिए। हिमालय ये नहीं देखता, हिमालय ये नहीं देखता कि दुनिया ने उनके साथ क्या किया ? कितनी ज्यादती करी है ? वो ये देखता है कि उसे क्या देना है ? उसे क्या मेहनत करनी है ? किस तरह से लोगों को प्लावित करना है ? किस तरह से उनका संरक्षण करना है ? इस हिमालय की चोटी से ही हमने अपनी सुरक्षा पायी। इसी से हमने अपनी गंगा, यमुना और सरस्वती की धाराए पायीं। ये तीनों धाराएं हमारे अन्दर निर्मल बहती रही हैं। हालांकि इसमें हम हर तरह की गंदगी डालते हैं। हर तरह से उसकी उपेक्षा करते हैं। हर तरह से उसका अपमान करते हैं। तो भी हिमालय सतत् अपनी स्वच्छता उसके अन्दर बहाते रहते हैं। लेकिन सब चाजों का अन्त होने वाला है। इस तरह की चीजें और अधिक चलने वाली नहीं।

सब लोग इसको याद रखिए कि मैं आपकी जबान में मधुरता पाऊँ, आपकी बातचीत में मिठास पाऊँ, आपके व्यवहार में सुरुचि पाऊँ। मैं इस चीज को अब माफ नहीं करूँगी, इसको आप जान लीजिए। ये करना महापाप है। किसी को भी किसी चीज के लिए दुख देना बहुत बुरी बात है। कृपया एक दूसरे का आदर करिए। आप सहजयोगी हैं, दूसरे भी सहजयोगी हैं। आज आप किसी पद पर हैं दूसरा नहीं, ये पद आपने पाया हुआ नहीं, हमने दिया हुआ है और जब चाहें इस पद से हम आपको हटा सकते हैं। इसलिए मेहरबानी से इसके योग्य बनें। नम्रतापूर्वक इसे करें।

कितने हा लोगों ने मुझसे ये शिकायत की है कि माँ हम आप ही के lecture (प्रवचन) में आएंगे और हम आपके सेन्टर पर नहीं जाएंगे। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। हजारों लोग मेरे लेक्चर में आते हैं और क्यों ऐसे खो जाते हैं ? तो क्या आप बीच में एक शैतान बनकर बैठे हुए हैं ? कृपया मेरी बात की ओर ध्यान दें और अपनी ओर देखें। दूसरों की ओर नहीं। हमने ऐसा किया है ? क्या हमनें ऐसा किया है ? क्या हमनें ऐसा किया है ? तब आप जानेंगे, जब आप इस चीज को समझ लें, जब आप अपनी गलती को देखेंगे तभी तो आप न ठीक कर पाएंगे, और तभी आप इस हिमालय की महानता को जानेंगे, नहीं तो आप समझ नहीं पाएंगे। आपके अन्दर न वो संवेदना है, न ही वो आंखें हैं, न ही वो समझ है, न ही वो सूझ-बूझ है कि आप इसे समझ पाएं कि ये क्या चीज है ?

जहाँ आप बठे हुए हैं, किसकी गोद में आप आए हैं। जिसकी गोद में हम रहे, पले, बड़े हुए वही ये महान पिता हमारा है। इसका आप मान रखिए और इनके सामने नतमस्तक हो करके ये सिद्ध करके दें कि जो हमने कार्य किया वो किसी काम का रहा। बेकार का नहीं रहा।

इसी प्रकार इन सात देवियों का आशीर्वाद आप पर अनन्त है। ये आपकी मौसियाँ समझ लीजिए। ये सारी आपकी देखभाल करती हैं। कहते हैं कि माँ मर जाए पर मौसी जिए। ऐसा कहा जाता है। क्योंकि मौसी जो होती है वो बच्चे को दुलार से रखती है। उसको संभालती है। उसकी रक्षा करती है। उसकी पूरी तरह से रंचित रखती है। उसका हमेशा मनोरंजन करती है। हरेक तरह की कठिनाइयों से आपको बचाती है। आप देखते हैं कि छवि घूम रही है कभी आकाश में बहुत सारे बादल आ रहे हैं। बहुत सुन्दर सुन्दर से आप देखते हैं कि हर समय रंग-बिरंगे वहां पर नजारे दिखाई देते हैं।

ये सब उनके खेल चल रहे हैं, आपको सुन्दरता से भरने के लिए। इसी प्रकार आप भी एक सुन्दर, अच्छे व्यक्ति बनें। यहां पर बहुत कुछ कमाने का है। अब देखना है कि इस शान्ति के पुण्य से निकल करके आप कितने सुन्दर होते हैं ?

आज की पूजा में बहुत महत्व है और हो सकता है इस पूजा में बहुत लोग बहुत कुछ पा लेंगे। लेकिन अपने चित्त को स्थिर करें और चित्त में पहले शान्ति की आराधना करके कि, "माँ हमें आप शान्ति दीजिए।" शान्ति की माँग करें, जिससे आप दुनिया में शान्ति फैलाएं। तब आनन्द आता है। आनन्द शान्ति के बगैर नहीं आ सकता।

It will work out tremendously, I know it will work out. Because I have really tried first of all to curb you down and after curbing you down I think you people should ascend because many things have fallen out. Now don't try to gather them and go back to them and justify. Try to be without them.

अनुवाद : मैं जानती हूँ यह (कुण्डलिनी जागरण) बड़े जोरों से कार्यान्वित होगा। सबसे पहले मैंने आपको दबाने की कोशिश की है और उसके बाद मैं सोचती हूँ आप लोगों को ऊपर उठना चाहिये, क्योंकि दबाने से आपकी अनेक बातें (विकार) छूटकर गिर गई हैं। अब उनको दुबारा बटोरकर फिर उनमें लिप्त होने की कोशिश न करें। अब उनसे मुक्त रहने का प्रयत्न करें।

---

## मातेश्वरी जगदम्बिके

**मातेश्वरी जगदम्बिके सुन लो हमारी प्रार्थना,**

महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली आदिशक्ति भगवती
कर दो कृपा निर्मलेश्वरी सहस्रार स्वामिनी अम्बिके।

जानूं न मैं पूजा तेरी, जानूं न मैं विधी कोई
करुणामयी हे अम्बिके, दे दो जगह चरणों में।

की जब से तेरी आराधना, माँ अपनी तो यही साधना
ऐसा अगर वर दीजिए, पूर्ण हो सबकी मनोकामना।

तेरी कृपा से आज तक चलता रहा जीवन मेरा
जीवन की ज्योति हो तुम्हीं, मोक्ष प्रदायिनी अम्बिके।

—श्रीमती शान्ती देवी
धर्मशाला

---

॥ जय श्री माता जी ॥

जन्म महोत्सव
नयी दिल्ली
२६-३-८५

सारे विश्व के सहजयोगी तथा सत्य को खोजने वाले सारे सात्विक जीवों को मेरा प्रणाम।

इस आपके आदर और आस्था से हृदय इतना अभिभूत हो जाता है कि कोई शब्द समझ में नहीं आते, किस तरह से कहा जाए कि आज कलियुग मानो खत्म हो चुका। कलियुग में माँ की कोई भी परवाह नहीं करेगा, माँ का मान नहीं होगा, ऐसा भविष्य है। लेकिन आज यहाँ पर जब देखा जाता है कितने लोगों ने आकर इस जन्म-दिवस को कितनी सुन्दरता से सजाया है ऐसा लगता है मानो सत्युग की शुरूआत हो चुकी।

वास्तव में हम तो कुछ भी नहीं हैं। एक माँ हो ही क्या सकती है? जो उसके बच्चे हैं वो ही सब कुछ हैं। माँ के लिए उसके बच्चों का बड़ा होना और अग्रसर होना ही सब कुछ होता है। पर जो माँ धर्म पर खड़ी हो और जो आत्मा से प्लावित् हो, वो ये ही चाहेगी कि जो संसार में अति उत्तम है, जो सबसे महान है, जो सबसे ज्यादा सुखदायी और आनन्ददायी है, वही मेरे बच्चे प्राप्त करें। जिस माँ की जितनी नजर होती है उतनी ही अपेक्षा वो अपने बच्चों के लिए करती है।

इतने थोड़े से समय में इतने लोग सहजयोग को प्राप्त हुए। उनके अन्दर आत्मा जागृत हो गयी। वो इस ऊँचे स्तर पर आ गए। और इससे कहीं अधिक ऊँचे स्तर की ओर अग्रसर हो रहे हैं, प्रयत्नशील हो रहे हैं, ये देखकर मुझे स्वयं ही आश्चर्य होता है और अत्यानन्द होता है।

किसी को धर्म की शिक्षा दी जाए और कहा जाए कि ये न करो तो मनुष्य उसे मानता ही नहीं। और खासकर मां से तो कोई नहीं मानने वाला। बेहतर यही है कि किसी तरह उसके अन्दर उसकी कुण्डलिनी जागृत कर दी जाए। कुण्डलिनी के जागृत होते ही जब वो स्वाधिष्ठान चक्र से गुजरती है तब वहाँ पर एक बड़ा भारी काम हो जाता है। स्वाधिष्ठान चक्र से हमारा एक और कार्य होता रहता है कि जब हम सोचते हैं तो हमारे मस्तिष्क के cells (कोशिकाएं) जो कि fat cells होते हैं, जो बार-बार हम इस्तेमाल करते रहते हैं, उनको नये cells की प्राप्ति कराना, ये कार्य स्वाधिष्ठान का है। क्योंकि जब हम इस्तेमाल करते हैं तो पुराने cells बिल्कुल समाप्त होते जाते हैं और उन्हें सशक्त नये cells की जरूरत पड़ती है। वो हमारा स्वाधिष्ठान चक्र बनाता है और उसे रक्त में छोड़ करके वही रक्त हमारे मस्तिष्क में जाता है तो वहां पर brain (मस्तिष्क) में वो cells काम करते हैं। इसीलिए हमारे यहाँ धर्म का स्थान बहुत ऊँचा माना गया है।

हमारा धर्म हमारे पेट में होता है जहाँ पर स्वाधिष्ठान कार्य करता है। जिस वक्त स्वाधिष्ठान चक्र खराब हो जाता है तो हमारा धर्म भी खराब हो जाता है। लेकिन जब कुण्डलिनी जागृत हो जाती है तो वो उन cells (कोशिकाओं) में धर्म भर

देती है।

बड़े-बड़े हमारे यहाँ आदिगुरू के अवतरण हुए हैं। जिनको आप कह सकते है इब्राहम, कन्फ्यूशस, सोक्रटिस, मोजिस, राजा जनक, नानक साहब, मुहम्मद साहब और अभी-अभी शिरडी के साईं नाथ। ऐसे अनेक महान पुरुष इस महान तत्व को लेकर इस संसार में अवतरित हुए थे और उन्होंने पूरे समय एक ही कार्य किया था कि मनुष्य का धर्म बांधा जाए। उसकी वजह ये थी कि अगर धर्म नहीं बांधा जाएगा तो स्वाधिष्ठान चक्र खराब जाएगा और मनुष्य का मस्तिष्क खराब हो जाएगा। और ये ही वजह है कि हमने उस धर्म को पूरी तरह से माना नहीं, समझा नहीं। इस वजह से आज इस कलियुग में हम सबका हाल इतना खराब है।

पर कुण्डलिनी ये कार्य बहुत सहज तरीके से करती है। जब कुण्डलिनी उठ करके स्वाधिष्ठान चक्र में जागृत हो जाती है तो वहाँ के जो cells हैं वो अनायास ही धार्मिक हो जाते हैं। इसीलिए आप देखते हैं जो सहजयोगी चाहे हिन्दुस्तानी हो, चाहे अंग्रेज हो, चाहे आस्ट्रेलिया का हो, कहीं का भी हो उसकी मर्यादाएं एक जैसी बनी रहती हैं। वो ईमानदार बन जाता है, वो अत्यन्त मोहब्बती बन जाता है, सहनशील बन जाता है। उसमें एक तरह का सौष्ठव आ जाता है और एक तरह का बड़ा गम्भीर आकर्षण उसके अन्दर आ जाता है। ये सिर्फ स्वाधिष्ठान चक्र को ही कृपा है जिससे कुण्डलिनी अपना कार्य करती है।

ये धर्म जो हमारे अन्दर जागृत होता है ये हमें विश्व धर्म की ओर ले जाता है। जहाँ हम देखते हैं कि सारे विश्व के धर्म एक ही चीज बताते हैं कि आपको अपना आत्म-साक्षात्कार प्राप्त होना चाहिए, आपको अपनी आत्मा प्राप्त होनी चाहिए, क्योंकि आप मन-बुद्धि-अहंकार आदि ये शरीर नहीं है, लेकिन आप आत्मा हैं ये सभी कहते हैं। सो ये आत्मा पाने का मार्ग यही कुण्डलिनी पहले स्वाधिष्ठान चक्र पर स्थापित करती है, जिस पर हम संतुलन प्राप्त करके धर्म को प्राप्त करके, हमारे मस्तिष्क में धर्म भावना जागृत हो जाती है।

धर्म का मतलब ये नहीं कि हम ये सोचें कि हम उसको मार डालें, इसको पीट डालें, उसका बदला लें या उससे इस तरह से व्यवहार करें, इससे हम ये दिखाएं कि हम कोई श्रेष्ठ हैं। कोई भी संसार में धर्म एक दूसरे से श्रेष्ठ नहीं है। वो सबका पूरक है। कोई एक आँख दूसरे से श्रेष्ठ नहीं हो सकती। उसी प्रकार सर्वधर्म एक ही हैं। लेकिन उनका आपस का रिश्ता, उनकी आपस की लेन देन समझने के लिए आपको पहले आत्मा प्राप्त होना चाहिए। क्योंकि आप अंधेरे में हमेशा ये ही सोचेंगे कि आप अकेले ही बैठे हुए हैं। इसलिए इस प्रकाश की जरूरत है। पर जब तक धर्म आपके अन्दर संतुलित तौर से जागृत नहीं होता है, कुछ भी कर लीजिए, कुण्डलिनी जागृत नहीं होगी।

ऐसा ही लोगों ने निरधारित किया हुआ था। और इसलिए धर्म पर पहला लक्ष्य किया था कि पहले धार्मिक बनो, धर्म में रहो। लेकिन वो बात न हो पायी। तो ये सोचा गया कि अच्छा ठीक है, कोई बात नहीं, जैसे भी आप, जैसे भी असंतुलन में आप हों, कैसी भी हालत में आप हों, आपकी कुण्डलिनी जागृत कर दी जाए। धीरे-धीरे धर्म भी बैठ जाएगा और कुण्डलिनी आगे चल पड़ेगी और आपको आत्मा भी प्राप्त हो जाएगा। यही आज का सहजयोग है।

उसमें कितना यश मिला है, इसके लिए मैं सिर्फ आप ही को धन्यवाद दे सकती हूँ। क्योंकि हम जो हैं सो हैं, हमारी क्या विशेषता है, मेरी ये ही समझ में नहीं आता। क्योंकि जो इंसान है उसकी कोई विशेषता होती ही नहीं है। जो नहीं है और वो हो जाए तो कोई उसकी विशेषता है। जो है, सूर्य है। उसमें अगर प्रकाश आता है तो इसमें सूर्य की कौन-सी विशेषता है? पर उस सूर्य के प्रकाश से जो पत्ते हरे हो जाते हैं, उसमें जरूर

उनकी विशेषता दिखाई देती है। इसी प्रकार आपका बनना, आपका उठना और आत्मा को प्राप्त करना इतनी ऊँची चीज है कि आप आज तक किसी भी आत्मिक इतिहास में इतना बड़ा कार्य हुआ नहीं।

सारे संसार में जब ये कार्य फैल जाएगा तो सारी दुनिया की घृणा, वैमनस्य, दुष्टता, सब नष्ट हो करके शान्ति और आनन्द में मनुष्य विराजेगा। कारण और परिणाम से परे मनुष्य उस स्थिति में जाएगा जहाँ परमात्मा का साम्राज्य होगा। और परमात्मा के साम्राज्य में किसी चीज की कमी नहीं रहती। योग क्षेम् वहाम्यहम। यहाँ योग पाते ही आप अपने क्षेम् को प्राप्त होंगे और दुनिया पूरी बदल जाएगी। इस दुनिया को बदले बगैर कोई भी कार्य नहीं हो सकता।

जैसे कि डॉ० वारन् ने आपसे बताया कि सारी theories, (धारणाएं) theories (धारणाएं) रह गयीं। उसको असलियत पर हम नहीं ला पाये। क्यों कि आप जब असलियत में नहीं हैं तो कोई भी चीज जो आप कर रहे हैं वो असलियत में कैसे आ सकती है।

चीज बहुत सीधी सरल है कि आप ही के अन्दर आपकी आत्मा है। आप ही के अन्दर आपकी माँ कुण्डलिनी है। उसकी जागृति भी सहज ही है। उसको प्राप्त करना भी बहुत ही सहज है। लेकिन उसको प्राप्त करने के बाद उसकी पूरी इज्जत करना, अपने साक्षात्कार की पूरी देखभाल करना और उसको व्यवस्थित रूप से, उस अंकुर को एक वृक्ष के रूप में डालना, ये ही काम थोड़ा-सा आपको करना होगा। उसके लिए जो लोग तैयार हैं वही कल के कर्णधार हैं। वही कल के अगुआ हैं।

और जो लोग आज आप सोचते भी हैं कि बड़े यशस्वी हैं ये बहुत थोड़े दिन की, चन्द दिन की चीज हैं। जो हमेशा अनन्त की चीज है उसे पा लेने से सारे दिगन्त में, सारे संसार में एक आनन्द का साम्राज्य फैल सकता है।

सबसे तो बड़ी चीज ये है कि ये संसार की जड़ें, जहाँ से सारी दुनिया प्लावित हो सकती है उसका सृजन यहीं होना चाहिए। भारतीय ही ऐसी बड़ी भारी चीज है जो इसे पा सकता है। औरों को तो गणपति के 'ग' से शुरूआत करनी पड़ती है। लेकिन वो लोग, जो गणपति के 'ग' से शुरूआत करते हैं, इतने जोर से सहजयोग को पकड़ते हैं, उतना ही हिन्दुस्तानी ये सोचता है कि अरे हम तो हिन्दुस्तानी हैं, हमें तो सब मिला ही हुआ है। वो इतना गहरा नहीं उतर पाता। उस गहराई में अपने को उतारना चाहिए, जिस गहराई के कारण आप इस महान भारतवर्ष में पैदा हुए हैं।

ये आपके पूर्वपुण्याई हैं जिसकी वजह से यहाँ पैदा हुए हैं। अगर आप में पुण्याई नहीं होती तो इस देश में आप पैदा नहीं होते। हालाँकि आपको इसका पता ही नहीं कि आपके पूर्वपुण्याई क्या हैं? इसलिए आपको ये सोचना चाहिए कि जब हम इस महान भारतवर्ष में पैदा हुए, जो सन्त-साधुओं से इतनी आशीर्वादित और पल्लवित् है, इस देश में जब हमारा जन्म हुआ तो कोई न कोई हमारे अन्दर विशेष बात होनी ही चाहिए, और उस विशेषता को हमने अभी तक जाना नहीं, ये हमारी एक तरह से भूल हो गयी है। कोई हर्ज नहीं। अब भी हम जान लें और उसके आगे हम अपना पूरा जो भविष्य है उसे उज्ज्वल करें और सारे संसार का भविष्य इसी भारतवर्ष से ही ठीक होने वाला है।

ये सबसे बड़ी एक अजीब-सी बात है कि भारतवर्ष के लोग इस बात को जानते नहीं कि सारी दुनिया को आप से ही सीखना है। मैं बार-बार आपसे यही विनती करती हूँ कि कृपया अपना धरोहर, आपने जो पाया हुआ है, उसे जानने की कोशिश करें, उसकी ओर आप आमुख हों, अपनी

संस्कृति की ओर आप झाँकें, क्योंकि जो भारतीय संस्कृति है ये आत्मा की पोषक है, यही आत्मा को बढ़ावा देने वाली है। बाकी किसी भी संस्कृति में आत्मा की ओर चित्त नहीं दिया गया।

इसलिए इस संस्कृति की ओर चित्त दें उसके ओर ध्यान दें, उसको समझने की कोशिश करें और अपने जीवन में उसे लाने का प्रयत्न करें। परमात्मा आप सबको सुबुद्धि दे, सुमति और आशीर्वाद दे कि आप सब अपने आत्मा से तृप्त हो जाएं।

परमात्मा आपको अनन्त आशीर्वाद दे।

---

## मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं, वदनं मधुरं, नयनं मधुरं, हसितं मधुरं
हृदय मधुरं, गमनं मधुरं, मधुरा निर्मला माता मधुरं॥

वचनं मधुरं, चरितं मधुरं, वसनं मधुरं वलितं मधुरं
चलितं मधुरं, भ्रमितं मधुरं, मधुरा निर्मला माता मधुरं॥

गीतं मधुरं, पीतं मधुरं, भुक्तं मधुरं, सुप्तं मधुर
रूपं मधुरं, तिलकं मधुरं, मधुरा निर्मला माता मधुरं॥

करणं मधुरं, तरणं मधुरं, हरणं मधुरं, रमणं मधुरं
वमितं मधुरं, शमितं मधुरं, मधुरा निर्मला माता मधुरं॥

सलिलं मधुरं, पवनं मधुरं, कमलं मधुरं, दिग्-दिग् मधुरं
हृष्टं मधुरं, शिष्टं मधुरं, मधुरा निर्मला माता मधुरं॥

भक्तं मधुरं, गाश्रो मधुरं, यष्टिर्मधुरा, सृष्टिर्मधुरा
दलितं मधुरं, फलितं मधुरं, मधुरा निर्मला माता मधुरं॥

**—श्री वल्लभाचार्य की रचना**
**से अनुसरित**

---

# सद्गुरू तत्व और विशुद्धि तत्व

अभी तक के लेखों के अनुसार अपने शरीर में अलग-अलग देवताओं के विशिष्ट स्थान हैं। सद्गुरु का भी स्थान अपने शरीर में है और यह स्थान हमारे शरीर में हमारी नाभि के चारों तरफ है। नाभिचक्र पर श्री विष्णुशक्ति का स्थान है। विष्णुशक्ति के कारण ही मानव की अमीबा से उत्क्रांति हुई है। और इसी विष्णुशक्ति से ही मानव का अतिमानव होने की घटना घटित होगी। सद्गुरु का स्थान आप में बहुत पहले से स्थित है। अब गुरुतत्व कैसा है यह समझने की कोशिश करते हैं।

गुरुतत्व अनादि है। आप में अदृश्य रूप से तीन मुख्य शक्तियां कार्यान्वित हैं। इसमें से पहली शक्ति को हम श्री महाकाली की शक्ति, दूसरी को श्री महा-सरस्वती की शक्ति व तीसरी को श्री महालक्ष्मी की शक्ति कहेंगे।

इसमें से जो महाकाली की शक्ति है उससे ऐसी स्थिति प्राप्त होती है कि जिससे अपना अस्तित्व टिका हुआ है। इस सृष्टि का अस्तित्व है। इस विश्व का अस्तित्व भी श्री महाकाली शक्ति के कारण ही टिका है। आप में इस शक्ति का संचालन 'इड़ा' नाड़ी से होता है। ये नाड़ी हमारे शरीर के बांयी तरफ है और वह अपने शरीर के बांयी तरफ का संचालन व नियमन करती है। बांयी सिम्पथैटिक नर्व्हस सिस्टम को चालित करती है। इस नाड़ी के कारण हमको इच्छाशक्ति प्राप्त होती है। इच्छा से ही मनुष्य कार्यान्वित होता है।

यह कार्यशक्ति आप में दायीं तरफ होकर आपके सारे दायें तरफ (दायीं सिम्पथैटिक नर्व्हस सिस्टम) का संचालन करती है। यह शक्ति कार्यशक्ति कही जाएगी और इस शक्ति का वहन या नियमन पिंगला नाड़ी से होता है। ये आपके शरीर में दायीं ओर होती है। इसे महासरस्वती शक्ति के कारण शक्ति मिलती है।

कुण्डलिनी शक्ति जागृत होने के बाद आप दोनों (इड़ा और पिंगला) नाड़ियों का संतुलन जान सकते हैं। असंतुलन कहां हो सकता है इसका ज्ञान हो सकता है तथा सहजयोग के कुछ आसान तरीकों से आप संतुलन ठीक कर सकते हैं। कहने का उद्देश्य यह है कि मनुष्य की ज्यादातर तकलीफें या सभी परेशानियाँ (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक) ऊपर कही गयी दोनों नाड़ियों के असंतुलन से ही होती हैं। इसलिए इन दोनों नाड़ियों में संतुलन रहना बहुत अत्यावश्यक बात कही जाएगी।

ऊपर कही गयी दोनों शक्तियों के अलावा हममें तीसरी शक्ति भी स्थित है। यह शक्ति भी बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि आज हम जिस मानव चेतना को प्राप्त हुए हैं वह इसी शक्ति के कारण है। इसे महालक्ष्मी की शक्ति कहा जाता है। इसीशक्ति के कारण मनुष्य की अमीबा से उत्क्रांति हुई है।

ये तीनों शक्तियाँ जब बाल स्वरूप एकत्रित होती हैं अर्थात जहाँ तीनों शक्तियों का समन्वय होता है वहाँ किसी भी प्रकार की गंदगी या परेशानी नहीं

---

[२५ सितम्बर, १९७९ में हिंदुजा ऑडिटोरियम बंबई में श्री माताजी के भाषण पर आधारित]

रहती। ऐसी चीज हमेशा नयी और ताजगी भरी होती है। ऐसी वस्तु में किसी भी तरह का अहंकार वगैरा नहीं होता है। यही वह सद्गुरू तत्व है। जैसे-जैसे मनुष्य बड़ा होता है वैसे-वैसे उसमें दो ग्रंथी और दो विशेष संस्था धीरे-धीरे बनती हैं, उसमें से एक को अहंकार व दूसरी को प्रति अहंकार कहते हैं। अंग्रेजी भाषा में उन्हें 'ego' व 'super ego' कहते हैं। ये दोनों संस्थाएं इच्छा व क्रिया शक्ति से बनती हैं। जब एक मनुष्य बहुत इच्छा करता है या केवल इच्छा से ही भरा होता है तब प्रति अहंकार प्रस्थापित होता है। दूसरी संस्था माने अहंकार की संस्था का क्रियाशक्ति से निर्माण होता है। ये संस्था किसी भी मनुष्य में जो कुछ भी काम करता है उसमें प्रस्थापित हो सकती है। मनुष्य उस समय सोचता है कि 'मैंने फलाना काम किया', 'मैंने सड़क बनाने का काम किया', 'मैंने बाँध बनवाया', 'मैंने मकान बनाया' इससे मनुष्य में एक तरह का कर्त्तापन आता है और उसी से उसकी अहंकार की संस्था बढ़ती है। ये संस्था आपके सिर के बायीं ओर से शुरू होकर सिर के बीचोंबीच आती है। जब अहंकार व प्रति अहंकार ये दोनों संस्थाएं बीचों-बीच आकर मिलती हैं तब तालू भर जाता है। इसे अंग्रेजी में 'calcification' कहते हैं। सामान्यतः बच्चे की तालू ३-४ साल तक पूरी भरती है। इस उमर तक बच्चे बहुत अच्छी तरह से बात करना सीख जाते हैं व अपनी मातृभाषा में बोल सकते हैं।

सत्गुरू तत्व, श्री महाकाली, श्री महासरस्वती और श्री महालक्ष्मी इन तीन शक्तियों के समन्वय से (मेल से) बना है। यह गुरूतत्व हमारे अन्दर परमेश्वर ने बहुत ही नूतन स्वरूप में स्थित किया है। आप सबको श्री सत्गुरु दत्तात्रेय का जन्म कैसे हुआ मालूम है। श्री दत्तात्रेय में श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु व श्री महेश इन तीनों देवताओं की शक्ति समन्वित है। ये शक्ति आपकी नाभि के चारों तरफ जिसे भव-सागर कहते हैं, उसमें समाविष्ट है।

संपूर्ण विराट पुरुष में भी ये शक्ति समाविष्ट है। ये शक्ति अनेक बार जन्म लेती है। आदिकाल से देखा जाय तो श्री आदिनाथ इसी शक्ति के अवतार हैं। जैन संप्रदाय में श्री आदिनाथजी को सत्गुरू मानकर उनका पूजन करते हैं और प्रार्थना करते हैं। परन्तु जैन लोगों को श्री आदिनाथजी की शक्ति के बारे में मालूम नहीं है। तीनों शक्तियों से निर्माण होने वाली ये प्रथम शक्ति है। इस शक्ति में धर्मांधता नहीं है। संन्यासी की जाति नहीं होती है, ऐसा हम कहते हैं। इसका अर्थ यही है कि वह सभी जाति व धर्म को मानता है। अगर कोई व्यक्ति कहता है कि मैं फलाने जाति का गुरू हूँ, मैं फलाने धर्म का गुरू हूँ तो निश्चित समझ लीजिए कि वह व्यक्ति सत्गुरु नहीं है। सत्गुरू तत्व की पहचान ही ये है कि सारे धर्मों का जो सार है या सर्वधर्मों की नूतनता या सर्वधर्मों का भोला-भाला रूप है वह इस सत्गुरू तत्व में शामिल है।

इस दुनिया में धर्म के नाम पर कितनी संस्थाएं हैं, वैसे ही अनेक व्यक्ति हैं जो अपने आपको धर्मगुरू कहलवाते हैं। उसमें भी कई राजनीतिक संस्थाएं हैं। फिर एक धर्मपंथियों ने दूसरे धर्मपंथियों पर टीका-टिप्पणी करनी है। उदाहरण—हिन्दुओं ने मुसलमानों पर, मुसलमानों पर क्रिश्चियन लोगों की, क्रिश्चियन लोगों ने मुसलमानों को। सच कहें तो ऐसे जो लोग हैं वे सब दांभिक व अज्ञानी हैं क्योंकि ऐसे लोगों को सत्गुरूतत्व माने क्या, इसका ज्ञान नहीं है। कौन सत्गुरू है, कौन नहीं है, ये वे नहीं जानते। अब सत्गुरू पहचानने का चिह्न क्या है यह देखते हैं। सत्गुरू आपके पैसा या धन की माँग नहीं करेंगे। उल्टा वह धन को धूल समान मानेंगे। सत्गुरू को आप सोना या पैसा, हीरे-मोती देकर खरीद नहीं सकते। सत्गुरूओं को इन चीजों की जरा भी आसक्ति नहीं रहती है। सत्गुरू अपने स्वयं के स्वभाव में स्वच्छंदता से रहते हैं। अगर उन्हें लगा तो वे औरो से बोलेंगे, नहीं तो नहीं। सत्गुरू परमेश्वर प्राप्ति के लिए आपकी विनती करके आप के पीछे-पीछे नहीं दौड़ेंगे। ये सब, मैं आपकी माँ हूँ

इसीलिए आपसे कह सकती हूँ कि प्रथम अपने-आपका सत्गुरूतत्व जानिए। मुझे कितनी योग-साधना किये हुए साधु व योगी मिले हैं। ये सारे लोग बहुत बड़े हैं। उन्हें मैंने कहा, आप अब जंगलों या पहाड़ों पर बैठने के बजाय समाज में आकर लोगों को परमेश्वर प्राप्ति के लिए उद्यत कीजिए, उनका सत्गुरूतत्व जागृत करवा दीजिए। परन्तु इन महा-योगी लोगों को समाज में नहीं आना है। वे कहते हैं कि समाज के लोग अभी इतने लायक नहीं हैं कि उन्हें इतनी बड़ी शक्ति सहज में दे दो। ऐसे महायोगी लोगों की स्थिति एकदम निराली है। ऐसे महान लोगों के सामने भी अति विनम्रता से व्यवहार करके संभल के बातें करनी पड़ती हैं, नहीं तो वे डंडे या चिमटे आपको मार सकते हैं। सत्गुरूओं के आसपास का वातावरण भिन्न प्रकार का व पवित्र होने से वे स्वभाव से भी कठोर होते हैं। वे किसी भी प्रकार का अधर्म नहीं सह सकते। समाज में परमेश्वर प्राप्ति के लिए तथा कुण्डलिनी शक्ति जागृत करने के लिए किसी सत्गुरू रूपी माँ की कार्य-पद्धति में दो प्रकार हैं। एक सत्गुरू तत्व व दूसरे मातृ-प्रेम। ऐसी माँ का हृदय प्रेमशक्ति से व परमेश्वर की करुणा से पूरा-पूरा भरा हुआ होता है। ऐसा बहता हुआ प्यार और परमेश्वर की शक्ति औरों को देने के लिए वह माँ उत्सुक रहती है। परन्तु इसी के साथ सत्गुरू तत्व को सारी बातों का पूरे उत्तरदायित्व के साथ पालन करना पड़ता है और इसीलिए औरों ने परमेश्वर प्राप्ति के लिए कौन-सी बातें करनी चाहिएं और कौन-सी नहीं करनी है इस पर प्रति-बन्ध लगाया है। उसके साधकों में अनुशासन होना बहुत जरूरी है। आपको पहले बता चुकी हूँ कि सत्गुरू तत्व आपके भवसागर में स्थिति है। अब ये सत्गुरू तत्व आपमें कार्यान्वित कैसे है ये देखकर थोड़ा-सा आश्चर्य होगा। उदाहरण के तौर पर समझ लीजिए आप बहुत ही सात्विक विचार के व्यक्ति हैं। आप किसी दुष्ट प्रकृति वाले व्यक्ति के घर खाना खाने गये तो आपको उसके घर खाने के बाद बहुत तकलीफ होगी। इस तरह की तकलीफ होने के पीछे यदि आप अति सूक्ष्म कारण खोजें तो आपके ध्यान में ये बात आएगी कि दुष्ट प्रकृति वाले व्यक्ति के घर खाना खाने से हमें तकलीफ हो रही है।

कुछ बातें बिल्कुल स्पष्टता से बता रही हूँ। इसके लिए किसी भी प्रकार का बुरा मत मानिए क्योंकि मैं 'माँ' हूँ इसलिए सब स्पष्टता से बता रही हूँ। यह सभी लोगों को जान लेना चाहिए।

सत्गुरूतत्व प्रमुखत: हमारे शरीर में यकृत में स्थित होता है। सत्गुरूतत्व से आप में चेतना शक्ति कार्यान्वित होती है। जब तक अपना यकृत अच्छी तरह से कार्य करता है तब तक अपनी चेतना ठीक होती है। जब आपका यकृत खराब होता है तब अपनी चेतना विचलित होती है। आपने देखा होगा जिस मनुष्य की पित्त प्रवृत्ति होती है उसने तली हुई चीजें खायीं तो उसे पित्त की तकलीफ होती है व उसकी चेतना विचलित होती है। अपना यकृत अपने चेतना को शोषित करता है और इसीलिए अपना यकृत अच्छी स्थिति में रखना जरूरी है। अब यकृत क्या करता है ? यकृत हमारे शरीर में से शरीर के लिए पोषक न होने वाली द्रव्यों (पदार्थों) का विश्लेषण करके उन्हें अलग करता है और उन विजातीय द्रव्यों का शरीर के बाहर विसर्जन करने में यकृत हमें मदद करता है। यकृत में बिगाड़ होने की क्रिया बहुत मंद होती है और इसीलिए उसमें खराबी होगी तो उसका निदान (diagnosis) होने में बहुत देर लगती है और उससे यकृत बहुत जल्दी खराब होता है। सर्वप्रथम आती है शराब। अब तक संसार में जितने सत्गुरूओं का अवतरण हुआ है चाहे वे श्री मोजेज हों, श्री लाओत्से हों या श्री सॉक्रेटीस हों, सभी सत्गुरूओं ने एक बात प्रमुखता से बतायी है कि मदिरापान मानव धर्म के विरोध में है। इसका कारण ये है कि अपने पेट में दस धर्मों का स्थान है। मदिरापान से अपनी चेतना पर

आक्रमण होता है तो उससे दसों धर्मों पर आक्रमण होता है। जब मनुष्य की चेतना ही कम होती है तब वह चेतना के विरोध में होता है। इस मामले में हमारे सहजयोगी शिष्यों का बहुत गहरा अध्ययन है और उसके लिए एक को लंदन विश्वविद्यालय ने डॉक्टरेट डिग्री दी है। वे मॉरेशियस के निवासी हैं। उनका नाम है श्री रेजीस। मदिरापान से मनुष्य की चेतना कम होकर मनुष्य का चेतना के विरोध में कैसे पतन होता है यह उन्होंने सिद्ध करके बताया है।

मदिरा से खून के जहरीले द्रव्यों का वर्गीकरण नहीं हो सकता। अगर कहीं हुआ तो उसके यकृत में ढेर बनकर यकृत की पेशी पर उसका प्रभाव आ जाता है। आपने ये देखा होगा कि जिस व्यक्ति ने मदिरापान किया हो उस मनुष्य के शरीर का तापमान नहीं बढ़ता, क्योंकि शरीर में निर्माण होने वाली सारी गरमी यकृत में या किसी दूसरे हिस्सों में संग्रहित होती है। पानी के घटकों के बदल से पानी भी शरीर में निर्माण होने वाली गर्मी शोषण नहीं कर सकता। और उसी से शरीर का एक-एक हिस्सा खराब होने लगता है। उसमें सबसे पहले यकृत पर सबसे ज्यादा प्रभाव होता है। इसी का परिवर्तन आगे कर्क रोग महारोग जैसे बीमारी में होता है। कर्क रोग भी हाइड्रोजन व ऑक्सीजन इसमें होने वाले बदल के कारण होता है। किसी कर्क रोगी व्यक्ति को ठीक से देखा होगा तो दिखाई दिया होगा उसके बदन पर अलग-अलग निशान पड़े हुए और उसके शरीर के कुछ हिस्से जले हुए। परन्तु उस व्यक्ति का तापमान हमेशा की तरह साधारण ही रहेगा। एक बात निर्विवाद है सत्गुरूतत्व के विरोध में कोई भी बात करने से वह शराब पीता हो या और कोई भी बात हो, उससे मनुष्य की चेतना नष्ट होकर उसमें कर्क रोग जैसी बीमारी हो सकती है।

शराब पीने से एक और बात मनुष्य के शरीर में होती है कि खून की नली फुलकर मोटी होती है। इसका कारण खून के पानी की घटना में होनेवाला परिवर्तन है जिससे मनुष्य में अनेक प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं।

सच देखा जाय तो मदिरा माने पाश्चिमात्य देशों में जिसे 'wine' कहते हैं। वह पेय है। 'wine' माने ताजे अंगूर का रस। मनुष्य के अतिश्योक्ति (extreme) के कारण उन्होंने अंगूर के रस को सड़वाकर उसे मदिरा का रूप दिया। इस तरह की मदिरा अलग-अलग वस्तुओं को पॉलिश करने के लिए इस्तेमाल करनी चाहिए। उदाहरण, अगर हीरे पॉलिश करने हैं तो 'जिन' से करने होते हैं या किसी जगह स्प्रिट इस्तेमाल करते हैं। ये स्प्रिट पॉलिश की जगह उपयोग में लाने के बजाय अगर शरीर में गया, तो उस वजह से बीमारियाँ पकड़ती हैं। मनुष्य की बुद्धि की विपरीतता की कल्पना भी नहीं कर सकते। जो चीज पॉलिश करने के लिए है उसको पीने में पता नहीं उसे कौन-सा आनन्द आता है? मदिरापान से मनुष्य की चेतना नष्ट होती है। इसलिए वह अपनी तरफ अन्तर्मुख होकर नहीं देख सकता। वह अपने आपको नहीं जान सकता। इससे वह सत्य से बिल्कुल दूर जाता है। 'सत्य' भयानक नहीं कि जिससे मनुष्य इतना दूर रहता है। 'सत्य' बहुत सुन्दर है, मनमोहक, शान्तिदायक और सुखकारक है। परन्तु मनुष्य को उसकी कल्पना नहीं है और इसीलिए मनुष्य को समझाने के लिए इस पृथ्वी पर अनेक सत्गुरूओं ने जन्म लिए। एक सादा-सा नुस्खा है कि मनुष्य को अपना जीवन समतोल रखना चाहिए। वह व्यावहारिक हो या वैवाहिक हो, अगर सामाजिक जीवन हो, सभी में समतोलना (सन्तुलित) होना आवश्यक है। ये बिल्कुल नैसर्गिक (natural) है। आपने देखा होगा कि सर्वसाधारण मनुष्य छः फुट के आसपास लम्बा होता है। वह कभी २०० फुट लम्बा नहीं होता है। वैसे ही इस सृष्टि की और बातों में भी आपको समतोलन देखने को मिलेगा। जो मनुष्य बहुत ज्यादा स्पर्धा (competition) में रहता है वह

अन्त में पागल हो जाता है। पश्चिमी देशों में हर बात में race (भाग-दौड़) है। वहाँ का statistics (आंकड़े) देखा जाए तो हर-एक बात में competition (स्पर्धा) दिखायी देगी। इस वजह से वहाँ के बहुत से लोगों की स्थिति पागलों जैसी हो गयी है। इस प्रतियोगिता के कारण मनुष्य में असाधारण निर्माण होता है, जिससे उसका सर्वांगीण (चौतर्फा या चारों तरफ से) विकास नहीं हो सकता। उल्टे उसका नाश होता है। अतः मनुष्य ने सन्तुलित जीवन जीकर अपने शरीर के सद्गुरू तत्व के सत्गुरू को मजबूत करना बहुत जरूरी है। उसके बाद ही उसमें धर्म की स्थापना हो सकती है। ऐसे सन्तुलित जीवन से मनुष्य अपने स्वयं का धर्म पहचानने में समर्थ होता है।

जिस समय मनुष्य स्वयं के दस धर्मों से गिर जाता है तब उसका नाश होता है और वह असन्तुलितता में धकेला जाता है। इसीलिए उन दसों धर्मों का पालन करना आवश्यक है। इन दस धर्मों के बारे में बाइबिल में विषद रूप से बताया गया है।

आप ने समाज पर सुसंस्कार नहीं किये तो आप की क्रियाशक्ति यानी पिंगला नाड़ी कार्यान्वित नहीं रहेगी और इड़ा नाड़ी पर दबाव आकर प्रतिअहंकार की संस्था मेंदू में स्थापित होगी और मनुष्य पूर्णतया उसी के दबाव में आएगा। इससे उल्टा अगर मनुष्य में अहंकार की संस्था ज्यादा प्रस्थापित होगी तो वह हिटलर की तरह बनेगा और उसे ऐसा लगने लगेगा कि मैं बहुत बड़ा कार्य कर रहा हूँ और बहुत से लोग मुझे हार पहनाएंगे और मेरी आरती उतारेंगे, वगैरा। परन्तु ऐसे मनुष्य को ये समझ में नहीं आता कि वह पूर्णतः अहंकार के दबाव में आने से असन्तुलितता में धकेला जा रहा है और ऐसा व्यक्ति पूर्णतः अहंकारी होता है। इसका वर्णन आप वाल्मीकि रामायण में, श्री नारद मुनि ऐसे अहंकार से किस तरह असन्तुलितता में धकेले गये, पढ़ सकते हैं। ऐसे अहंकारी लोगों को लगता है, हम बहुत कामयाब हैं। परन्तु ऐसे व्यक्तियों का व्यक्तिगत जीवन गौर से देखा जाय तो ऐसे लोग अत्यन्त तेज स्वभाव के, नीच और अतिमूर्ख होते हैं। यह सब असन्तुलन से होता है। असन्तुलन सद्गुरू तत्व की रक्षा न करने से आता है।

अब आप सवाल करोगे कि सद्गुरू तत्व की रक्षा कैसे करें और इसके लिए क्या करें? सर्वप्रथम आपके गुरू कौन हैं यह देखना जरूरी है। यह समझना जरूरी है। समाज में अनेक प्रकार के गुरू देखने को मिलते हैं। अगर कोई गुरू हमें नाम लेने (गुरू अपने स्वयं की स्तुति) के लिए प्रवृत्त करता होगा तो निश्चित समझ लीजिए कि वह सद्गुरू नहीं है। परमेश्वर का नाम समझकर और जिस प्रकार की तकलीफ होगी उसके देवता का नाम लेते हैं। सबके लिए एक ही देवता का नाम लेकर काम नहीं बनता। उल्टे उससे और परेशानी बढ़ती है। इस बारे में यह कह सकते हैं हमें बुखार आया तो डॉ० की दी हुयी एक दवाई हम खाते हैं। पर वही दवाई दूसरी बीमारियों पर कैसे काम आएगी? उल्टे उससे परेशानी ही होगी। यही बात अलग-अलग देवताओं के नामों के बारे में कही जाएगी।

जो व्यक्ति आत्म-साक्षात्कारी नहीं वह सद्गुरू नहीं हो सकते। माँ के पास जो करुणा होती है वह उन लोगों में नहीं होगी। योगी लोगों ने बहुत मेहनत की है और उसके बाद उनका अधिष्ठान जमकर उन्हें परमेश्वरी शक्ति की अनुभूति मिलती है। इसलिए और लोगों को भी कुण्डलिनी जागृति के लिए मेहनत करनी चाहिए ऐसा उन्हें लगता है। जग में अब तक जितने सत्गुरू हुए उन्होंने सहजयोग का ही मार्ग अपनाया था। उदाहरण श्री ज्ञानेश्वर महाराज, श्री तुकाराम महाराज, श्री नामदेव, श्री नानक, श्री कबीर ऐसे अनेक सद्गुरूओं ने समाज में रहकर लोगों की सेवा की और उन्हें धर्म सिखाने का प्रयास किया और ठीक मार्ग पर लाने का प्रयास

किया। परन्तु उस जमाने के लोगों ने इन सभी गुरुओं को न सुनकर उन लोगों पर इतने अत्याचार किये, बहुत बार उन्हें मारा तक, उनको समाज से बाहर कर दिया, उन्हें खाने को भी नहीं दिया। अब उन सभी की लोग पालकी लेकर घूमते हैं, जुलूस निकालते हैं, उनके नाम से बड़े बड़े सम्मेलन करते हैं, उन्हीं के नाम से पैसे कमाते हैं और उनके नाम पर अन्नछत्र भी चलाते हैं। लोगों के इस पाखंडीपन का और झूठेपन का बड़ा आश्चर्य होता है। जब सद्गुरु प्रत्यक्ष जिन्दा थे तब उनके साथ बुरा व्यवहार किया और उनकी मृत्यु के बाद उनकी जय-जय क्यों? यह बिल्कुल सद्गुरु तत्व के विरोध में है।

मनुष्य को बुद्धि स्वतंत्र है। परमेश्वर ने ही उन्हें स्वतंत्रता दी है। आज न कल उसे अद्भुतशक्ति का ज्ञान हो यही उस विराट परमेश्वर की इच्छा है। अब तक सहजयोग में बहुत लोग सहज ही पार हुए। अब सहजयोग एक ऊँचाई पर आकर टिका है। उसे आपको 'महायोग' कहना होगा। जब तक अपनी कुण्डलिनी शक्ति का उत्थान न होकर वह ब्रह्मरन्ध्र का छेदन नहीं करती तब तक योग हुआ कैसे कह सकते हैं? अब तक जितने भी योग के वर्णन हैं वे सारे योग की पूर्व तैयारी हैं। परन्तु सहजयोग में जिस समय कुण्डलिनी शक्ति का उत्थान होता है उस समय ये सारे योग अपने आप घटित होते हैं। कुण्डलिनी शक्ति सहस्रार तक जाती है और जिस समय कुण्डलिनी शक्ति सहस्रार में आकर ब्रह्मरन्ध्र का छेदन करती है उस समय 'महायोग' घटित होता है। इसीलिए सहजयोग जो अनादि है वह आपके साथ ही जन्म लेता है और आपके साथ ही अनेक सालों से चलकर आया है, जिसे आज उसकी परिपूर्ति हो रही है। उसे 'महायोग' मानना चाहिए। आप सभी 'महायोग' पाने की स्थिति में आकर पहुँचे हो। अब आपके गुरुतत्व को फलित होने का समय आया है। बहुत पहले सद्गुरु दो-तीन शिष्य रखते थे। परन्तु जब तक यह बात सर्वसामान्य मनुष्य तक, सारे जनसमुदाय तक, नहीं पहुँचती तब तक उसका अर्थ नहीं है। अब यह ज्ञान आम जनता तक पहुँचने का समय आया है, क्योंकि आपकी अन्तर्रचना ज्ञान मिलने के लिए परिपूर्ण है। केवल आपका कनेक्शन मेन्स (mains) से लग जाए बस!

आपके सत्गुरुतत्व को नमस्कार करके आपकी श्रीकृष्ण शक्ति के बारे में मैं अब आपको बतलाती हूं।

मनुष्य में शुरू से ही श्रीकृष्ण शक्ति स्थित है। जिस समय प्राणी से मनुष्य की उत्क्रांति हुई उस समय उसकी (मनुष्य की) गर्दन ऊँची उठ गयी। ये कार्य मनुष्य की गर्दन में विशुद्धि चक्र के कारण हुआ। इस चक्र में सोलह पंखुड़ियाँ हैं। ये चक्र जिस जगह आपकी गर्दन में स्थित है, उस जगह से आपकी गर्दन ऊँची उठी है। यह कार्य विशुद्धि चक्र की कृष्ण शक्ति जागृत होने से हो सका। इससे आपकी उत्क्रान्ति में परिपूर्णता आयी ये कहा जाएगा। उत्क्रान्ति का इतिहास देखा जाय तो सर्वप्रथम एक पेशी अमीबा, उसके बाद मछली, कछुआ ऐसा होते होते मानव उत्क्रान्ति की आज की स्थिति तक पहुँचा है। श्रीकृष्ण शक्ति सम्पूर्ण शक्ति है। जब आपमें श्रीकृष्ण शक्ति जागृत होती है तब आपका सम्बन्ध विराट से होता है। इसमें आपको समष्टि दृष्टि आती है। इसका अर्थ आप मेरी तरफ या मेरी फोटो की तरफ हाथ फैलाकर बैठोगे तो श्रीकृष्ण शक्ति जागृत होकर आप विराट से सम्बन्धित होते हैं और आपके हाथ में ये जो श्रीकृष्ण की विराट शक्ति सर्वत्र फैली हुई है, उससे चैतन्य जा सकता है। (हाथ में जा सकता है) जिस समय आपके हाथ से ये श्रीकृष्ण शक्ति बहने लगती है तब आपमें साक्षी भाव आता है। इसका मतलब आप सभी बातें किसी नाटक की तरह देखते हैं। असल में यह सब नाटक ही है। श्रीकृष्ण जी की उस समय की लीला या प्रभु श्री रामचन्द्र जी ने उस समय जो कुछ किया वह सभी नाटक ही था। इतने सुन्दर ढंग से उन्होंने वह

नाटक प्रस्तुत किया कि वे सम्पूर्णतः उसमें समरस हो गये। श्रीकृष्णजी ने अनेक लीलाएं कीं। वे पूर्णावतार थे। जब मनुष्य में पूर्णत्व आता है तब वह विश्व की ओर नाटक की तरह देखता है और वह सम्पूर्ण साक्षित्व में उतरता है। उस समय वह भ्रमित भी नहीं होता और दुःखी भी नहीं होता, न सुखी होता। वह आनन्द में समरस रहता है। यह श्रीकृष्ण शक्ति से होता है।

श्रीकृष्ण शक्ति के दो अंग (शरीर के हिस्से) हैं। एक विशुद्धि चक्र के दायीं ओर बायीं तरफ और एक बीचोंबीच में। इसमें जो शक्ति बीच में है वह विराट की तरफ ले जाती है। बायीं ओर की शक्ति मनुष्य के मन की कोई गलती या झूठे काम करने के बाद बनने वाली भावनाओं से खराब होती है। जिस समय मनुष्य को लगता है कि मैंने बहुत पाप किया है और गलती की है तब उसका विशुद्धि चक्र बायीं तरफ खराब हो जाता है। मनुष्य को यही पाप की और गलती की धारणा उसे, उससे दूर भगाने के लिए, नशीली वस्तुओं के पास ले जाती है। इसमें अपने यहां एक चीज बहुत ज्यादा लोग इस्तेमाल करते हैं। वह है सिगरेट, बीड़ी, सुरति (तम्बाकू)। सिगरेट या बीड़ी पीना या तम्बाकू खाना श्रीकृष्ण शक्ति के विरोध में है। परंतु आपको आश्चर्य होगा कि जिन लोगों को ऐसी आदतें पहले थीं उनकी ये आदतें सहजयोग में आने के बाद, पार होने के बाद अपने आप छूट गयीं।

परमेश्वर ने तम्बाकू कीटाणु नाशक के रूप में बनायी। परन्तु मनुष्य की बुद्धि अजीब होने के कारण वह उसी तम्बाकू का उपयोग विपरीत तरीके से करता है। इसी तम्बाकू के कारण श्रीकृष्ण शक्ति को बाधा आती है और सत्गुरूतत्व भी खराब होता है। क्योंकि खायी हुई तम्बाकू पेट में जाकर वहाँ से यकृत वगैरा शरीर के अंगों को खराब करती है। सत्गुरूतत्व अपनी नाभि के चारों तरफ फैला हुआ होने के कारण सारी की सारी परेशानियाँ एकदम किसी आपत्ति की तरह आकर गिरती हैं।

विशुद्धि चक्र के बायें में श्री विष्णुमाया की शक्ति स्थित है। ये शक्ति बहन की है, श्रीकृष्ण की बहन की। श्रीकृष्ण की जो बहन मारते समय आकाश में उड़ गयी और जिसने आकाशवाणी की वही ये विष्णु-माया शक्ति हैं। जिस मनुष्य की बहन बिमार होगी उसके विशुद्धि चक्र पर बायीं ओर बोझ महसूस होगा। अगर किसी मनुष्य की नजर अपनी बहन के प्रति या अन्य महिलाओं के प्रति ठीक या पवित्र नहीं होगी तो यह चक्र तुरन्त खराब हो जाता है। आजकल के समाज में बहुत लोगों का यह चक्र खराब रहता है। क्योंकि उनकी नजर पवित्र नहीं होती है। अपने पुरातन शास्त्र के अनुसार अपनी पत्नी के सिवाय और सारी महिलाओं को बहन की तरह देखना चाहिए। ऐसा आप करके देखिए तुरन्त आपको सन्तोष, शान्ति व पावित्र्य मिलेगा। इस तरह बर्ताव करने से आपकी कितनी ही परेशानियाँ खत्म होंगी। अपवित्रतता के बर्ताव से विशुद्धि चक्र के बायीं तरफ तकलीफ होती है। आजकल के सिनेमा के कारण लोगों पर बहुत असर होता है। उन सबको उन्होंने जो अपवित्र कृत्य किये हैं उसके लिए भुगतना पड़ेगा। आजकल के लोगों में पवित्रता और तेजस्विता, भोलापन नहीं दिखायी देता। कितनों की आँखें इधर-उधर घूमती हैं। ये आँखें घुमाना भी श्रीकृष्ण शक्ति के विरोध में है। आँखें घुमाने के कारण हमें आनन्द तो मिलता नहीं है और अपने बायीं तरफ़ भूतों का प्रवेश होता है और उससे बायीं विशुद्धि पर पकड़ आती है। उससे ऐसे लगता है मुझे ये बात नहीं करनी चाहिए थी। हमारे बचपन में हमारे माता-पिता कहते थे नीचे सर करके जमीन पर नजर रखकर चलिए। आपको पता होगा कि लक्ष्मणजी ने सीताजी के पाँव ही देखे हैं। उसके ऊपर उन्होंने कभी नजर नहीं उठायी थी। इसमें उनका कोई बुरा उद्देश्य नहीं था। यह एक कायदा था कि नजर जमीन पर रख-कर चलना। जो लोग नजर नीचे करके चलते हैं वे बादशाही वृत्ति के होते हैं। जो भिखारी या गंदे होते हैं वे अपनी नजर हमेशा इधर-उधर घुमाते हैं।

ये आँख घुमाने की बीमारी ऐसी चली है कि उससे आँखों की बीमारियाँ फैलती हैं। लोगों की नजर कमजोर होती है। उस समय फिर हरी घास पर चलने को कहते हैं क्योंकि पृथ्वीमाता हमारी माँ है। एक बार माँ क्या है, ये जानने के बाद बहन क्या है, ये लोग समझ सकेंगे।

कहने का उद्देश्य यह है कि हमें अपनी नजर नीचे रखकर चलना बहुत जरूरी है और किसी की भी ओर अपवित्र नजरों से नहीं देखना चाहिए। यही बात हमारे अनेक सत्गुरूओं ने कही है। श्री येशूख्रिस्त ने कहा है आपकी नजर व्यभिचारी नहीं होनी चाहिए। खास करके हमारे इस मध्यम वर्गीय लोगों को ये बातें समझ लेनी चाहिए, क्योंकि जिन के पास बहुत पैसा है उनके दिमाग में ये बातें नहीं आएंगी। कारण वे अपने पैसों को मस्ती में चूर होंगे, उन्हें पाप-पुण्य की बातों को सोचने के लिए समय नहीं है। मनुष्य को पाप-पुण्य का विचार विशुद्धि चक्र से आता है। अगर पाप-पुण्य का विचार नहीं होगा तो आपकी कुण्डलिनी जागृत नहीं होगी। विश्व में पाप व पुण्य दोनों हैं। जब आप सहजयोग में आकर पार होते हो तब आपकी श्रीकृष्ण शक्ति जागृत होकर आप प्रतिष्ठित होते हैं। आप पहले से ही प्रतिष्ठित हैं, पर पार होने से पहले आपको उसकी जानकारी नहीं थी कि परमेश्वर ने कितने परिश्रम से आप में एक एक चक्र बनाया है। आप ये पूरा शास्त्र जान लीजिए और अपनी महत्ता समझ लीजिए और अपनी स्थिति जानिए। आप सारे विश्व के फूल हैं और अब फल में रूपांतरित होने का समय आया है, आप यह समझ लीजिए। आप परमात्मा के अंश हैं। परमेश्वर आपको सन्मान दे रहा है और आपके सामने नतमस्तक होकर आपकी विनती कर रहा है। आप ये सारा ज्ञान पा लीजिए। अपने 'स्व' का अर्थ पहचानिए। अपने 'स्व' को जानने से ही मनुष्य अपनी सुबुद्धि पाता है। जब तक मनुष्य में दुर्बुद्धि है तब तक उसकी जागृति नहीं होती। सुबुद्धि विशुद्धि चक्र से जागृत होती है। जब मनुष्य अपने विशुद्धि चक्र में जागृत होता है तब उसे सुबुद्धि आती है व सन्तुलन आता है। एक होती है सुबुद्धि व दूसरी है दुर्बुद्धि। बुद्धि गधे की तरह भी हो सकती है और मूर्ख की तरह भी। बुद्धि से तर्क, ज्ञान और उससे मनुष्य चोरी भी कर सकता है। वह कहेगा मैं क्यों न चोरी करूं ? मेरे पास फलानी चीज नहीं है उसके पास है तो मैं चोरी करूंगा। इसका कारण तर्कबुद्धि है। अब देखिए तर्कबुद्धि के कारण मनुष्य हर-एक चीज की तरफ व्यक्तिगत विचार से देखता है। परन्तु सुबुद्धि से वैसा नहीं होता। सुबुद्धि से हमारी व दूसरे की चीज उसी की है ये दिमाग में आएगा। मेरी चीज में जो आनन्द है वह दूसरों की चीज में नहीं है। सचमुच कोई भी चीज किसी की नहीं। हमसब सब का सब यहीं छोड़ जाते हैं। यह तो सब जमा-खर्च है कि यह मेरा वह मेरा। एक बहुत ही सर्वसाधारण बात है जब सब कुछ यहीं छोड़ जाना है तो उसके पीछे इतनी भाग-दौड़ काहे की ?

अब दायीं ओर की विशुद्धि के बारे में देखते हैं। यह श्रीकृष्ण और राधा की शक्ति से बना है। इस शक्ति के विरोध में जब मनुष्य जाता है तब वह कहता है मैं बहुत बड़ा आदमी हूँ, मैं राजा हूँ, मैं बहुत बड़ा लीडर हूँ और मैं ही सब कुछ हूँ। ऐसी वृत्ति से उस मनुष्य में कंसरूपी अहंकार बढ़ता है। आपको मालूम है कंस ने अपनी सगी बहन को व बहन के बच्चों को किस तरह मारा। उसे लगता था किसी भी प्रकार से मुझे सभी लोगों पर अपना अधिकार जमाना चाहिए। उसे दुनिया की और कोई चीज नहीं दिखाई देती। उसे दायीं तरफ की विशुद्धि चक्र की पकड़ होती है। परन्तु सर्वप्रथम आप में सर्दी के कारण दायीं तरफ की विशुद्धि पर पकड़ आती है।

अब विशुद्धि चक्र के बीचोंबीच जो शक्ति है वह विराट की शक्ति है। इस शक्ति से मनुष्य परमेश्वर की खोज में रहता है। अगर मैं विराट का एक

हिस्सा है तो परमेश्वर को खोजने का मतलब क्या? इसी का मतलब जब तक आपमें सामूहिक चेतना नहीं आती तब तक आपको इसका जवाब नहीं मिलेगा। केवल लोगों को भाई-बहन मानकर सामूहिकता नहीं आएगी। परन्तु ये सामूहिक चेतना में अपने आप घटित होता है। जब तक आप सहजयोग में आकर आपकी कुण्डलिनी जागृत नहीं होती तब तक आपकी सामूहिक चेतना जागृत नहीं होगी। एक बार आपकी कुण्डलिनी शक्ति जागृत होकर आप पार हो जाओगे तो आप औरों की भावनाएं, संवेदन ये सब अपने आप में जान सकते हैं। ये आपकी सामूहिक चेतना जागृत होने से हो सकता है। आप अपनी तरफ अन्तर्मुख होकर देख सकते हैं व आपकी दृष्टि Absolute (परम) की तरफ मुड़ती है। और बातों की तरफ हम पूर्णता की तुलना से देखते हैं। अपनी आंतरिक स्थिति क्या है ये जान सकते हैं। अब आसानी से बताएं तो आपके हाथ की पांच उंगलियां, उस पर आप अपने शरीर के पांच चक्रों की हालत जान सकते हैं। वैसे ही और दो चक्रों की हालत भी अपने हाथ के तलुवे से जान सकते हैं। बांये हाथ पर बांयी इड़ा नाड़ी के चक्रों का, तो दाहिने हाथ पर दाहिनी पिंगला नाड़ी के चक्रों की हालत आप जान सकते हैं। इस तरह की जानकारी केवल कुण्डलिनी जागृत होने के बाद पार होने पर ही होती है। जब मनुष्य पार होता है तब उसके मज्जारज्जू के सात चक्र जागृत होते हैं। उसकी जानकारी दोनों हाथों पर होती है। इसी तरह उस स्थिति में उसे सामूहिक चेतना प्राप्त होती है।

ऊपर दी गयी बातें आपके विशुद्धि चक्र से सम्बन्धित हैं। हमारे यहाँ सहजयोग में बहुत से लोग आते हैं और पार होते हैं। परन्तु इनमें कितनों को चैतन्य लहरियों की संवेदना नहीं होती। इसका कारण उनके विशुद्धि चक्र पर की समस्या। इससे पहले विशुद्धि चक्र सिगरेट और बीड़ी पीने से खराब होता है, ये कहा है। शहरों में अपवित्रता ज्यादा होने के कारण ये चक्र सिगरेट या बीड़ी न पीते हुए भी खराब होता है। विशुद्धि चक्र खराब होने से इस चक्र में से मेंदू के दोनों तरफ संवेदना ले जाने वाली नाड़ियां खराब होती हैं। ऐसे मनुष्य की संवेदन क्षमता कम होती है। परन्तु जैसे-जैसे विशुद्धि चक्र जागृत होता है वैसे वैसे संवेदनक्षमता में वृद्धि होती है। विशुद्धि चक्र जागृत करने के लिए कुछ मंत्र हैं। आपको आश्चर्य होगा, विशुद्धि चक्र जागृत करने के लिए अपनी अनामिका उंगली दोनों कान में डाल-कर गर्दन पीछे करके और नजर आकाश की ओर रखकर जोर से व आदर से "अल्ला-हो अकबर" मंत्र (१६ बार) कहने से विशुद्धि चक्र साफ होता है। तब आपको जानना होगा कि 'अकबर' माने विराट पुरुष परमेश्वर है। श्री गुरूनानक साहब ने भी विराट परमेश्वर के बारे में अर्थात् श्रीकृष्ण के बारे में बहुत सी बातें लोगों को बतायीं। परन्तु ऐसे कितने लोग हैं जिन्होंने कही हुई बातों का अव-लंबन किया? उन्होंने कहा था, दोनों हाथ नमाज पढ़ते हैं उस तरह हाथ फैलाकर परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। इस तरह से हाथ फैलाकर प्रार्थना करने से कुण्डलिनी शक्ति का जागरण होता है। परन्तु ये बात बहुत से लोगों को मालूम नहीं है। गुरू नानक साक्षात दत्तात्रेय के अवतार थे। और कुण्डलिनी जागरण के लिए जितना काम उन्होंने किया है उतना किसी ने भी नहीं किया। शैतान को कैसे खत्म करना है इसके बारे में उन्होंने बहुत छोटी छोटी व महत्वपूर्ण बातें बतायी हैं जिनका इस्तेमाल सहजयोग में हम बहुत तरह से करते हैं। श्री आदि शंकराचार्यजी ने तो बहुत सी सूक्ष्म बातें लिख रखी हैं। इन सूक्ष्म बातों को आप कायदे से अपने जीवन में अपनाएंगे तो सहजयोग में पूर्णतः पिघल जाओगे। अपने देश में साधु-सन्तों ने अवतार लेकर ऐसे ज्ञान को खोलकर समाज में जागृति करके आप पर अनेक उपकार किये हैं। विशेष करके अपने महाराष्ट्र में साधु-संतों ने अवतार लेकर इस भूमि को पावन किया है। इन संतों की इतनी तपश्चर्या है कि इनके केवल इशारों पर लोग पार होते हैं। मैं जब सहज-योग के प्रचार कार्य के लिए गाँवों में जाती हूँ तब

हजारों लोग आते हैं। परन्तु शहरी लोगों को आने की फुर्सत नहीं होती क्योंकि गाँव के लोगों को सत्य की पहचान है। और ऐसे ही लोग सहजयोग में प्रस्थापित होंगे। यहाँ ऐरों-गैरों का काम नहीं है। जिन लोगों को अपने स्वयं के लिए आदर नहीं, श्रद्धा नहीं, अगर सत्य की आसक्ति नहीं, उनके लिए सहजयोग नहीं है। सहजयोग प्राप्ति के लिए बहुत बड़े पंडित या ज्ञानी होने की जरूरत नहीं है। सहजयोग सर्वसाधारण मध्यमार्गियों के लिए है। उसके लिए शिक्षा की आवश्यकता है ऐसा भी नहीं, परन्तु पक्के हृदय के पक्के लोग होने चाहिए या राजे-शाही स्वभाव के लोग चाहिए। ऐसे लोग सहजयोग में प्रस्थापित होते हैं।

श्रीकृष्ण शक्ति के बारे में लिखने के लिए बहुत सारी बातें हैं। परन्तु बहुत ही थोड़े शब्दों में यहां पर रखी गयी हैं। आप सहजयोग में आकर पार होने के बाद कुण्डलिनी का मतलब क्या है ये जान सकते हैं। उसका स्पंदन आप अपनी नजर से देख सकते हैं। जब तक आप 'पार' नहीं होते तब तक आप इस ज्ञान के बारे में अनभिज्ञ (अन्जान) होते हैं। परन्तु आप पार होने के बाद इस ज्ञान का प्रकाश आप में आता है। सर्वव्यापी परमेश्वर के साथ चैतन्य लहरियों से आप बात कर सकते हैं क्योंकि ये परमेश्वरी शक्ति सारे चराचर में भरी है।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद !

---

**सभी सहजयोगियों से विनम्र निवेदन है कि समय से अपना वार्षिक चन्दे का नवीनीकरण स्वयं करा लें। यदि किसी कारण पत्रिका आपके पास न पहुंचे तो भी हमें सूचित करें।**

**सम्पादक**

---

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 3699 9/81

# 卐 जय श्री माताजी 卐

## ॥ चक्रों की शुद्धि के लिये प्रार्थना ॥

**१. मूलाधार चक्र—**

हे माँ ! हम सब बालक तेरे,
श्री गणेश का दें ज्ञान हमें।
देना 'निर्दोषता' हम सबको,
'सुबुद्धि' का दें वरदान हमें ॥ हे माँ !

**२. स्वाधिष्ठान चक्र—**

'निर्मला विद्या' देना हमको,
पवित्र विद्या का हम वरण करें।
दें शांति हमारे अंतर में,
विचारों, शंकाओं को हरण करें ॥हे माँ !

**३. मणिपुर चक्र—**

प्रलोभनों, कुइच्छाओं को दूर करें।
पवित्र हमारे चित्त करें।
बनें गुरु स्वयं के हम,
गुरुता से हमको अधिकृत करें ॥ हे माँ !

**४. अनाहत चक्र—**

हैं आप ही आत्मा, परमात्मा,
आत्मा हमें बनायें हे माँ !
"मैं आत्मा हूँ" इस मंत्र का,
दर्शन हमें करायें हे माँ ! ॥ हे माँ !

हर पल रखना हे माँ ! हमको,
अपने ही प्रिय बंधन में।
हैं आप ही पिता हमारे,
रखना सदा संरक्षण में ॥ हे माँ !

**५. विशुद्धि चक्र—**

करें दूर सब भ्रम हमारे,
सब दोषों को हरण करें।
"मैं निर्दोष हूँ" हे माँ !
मेरी क्षुद्रताओं का क्षरण करें ॥ हे माँ!

मृदुवचन, मधुमुस्कान की,
दे देना हमको युक्ति।
मधुर व्यवहार करें सबसे,
बना देना हमें प्रिय व्यक्ति ॥ हे माँ !

मधुरता से सामूहिकता,
आगे ही बढ़ती जाती है।
सदी डालियाँ परिपक्व फलों की,
नम्रता से झुक जाती हैं ॥ हे माँ !

आधिपत्यता, आक्रामकता दूर करें,
सामूहिक-चेतना में हमको एक करें।
गगन गूंजे 'जय जय' की ध्वनि से,
'विराट' का हम अभिषेक करें ॥ हे माँ!

**६. आज्ञा चक्र—**

क्षमा करें स्वयं को हम,
सबके प्रति क्षमाशील बनें।
"प्रभु के साम्राज्य" में प्रवेश मिले,
'चैतन्य-चेतना' से गतिशील बनें ॥ हे माँ!

**७. सहस्रार चक्र—**

तेरे चरणों पर समर्पित शीश हमारे,
क्षमा हमारे सब अपकार करें।
आत्मा की गहराइयों में हमें उतारें,
स्थापित आत्म साक्षात्कार करें ॥ हे माँ !

**जय श्री माता जी**

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and
Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
One Issue Rs. 7.00, Annual Subscription Rs. 30.00 Foreign [ By Airmail £ 7 $ 14 ]